CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2012 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: आज किसी भी व्यक्ति का सबसे अलग एक टापू की तरह जीना संभव नहीं रह गया है। भारत में विभिन्न पंथों और विविध मत-मतांतरों के लोग साथ-साथ रह रहे हैं। ऐसे में यह अधिक ज़रूरी हो गया है कि लोग एक दूसरे को जानें; उनकी ज़रूरतों को, उनकी इच्छाओं-आकांक्षाओं को समझें; उन्हें तरजीह दें और उनके धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों, अनुष्ठानों को सम्मान दें। भारत जैसे देश में यह और भी अधिक ज़रूरी है, क्योंकि यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है। स्वामी विवेकानंद इस बात को समझते थे और अपने आचार-विचार में अपने समय से बहुत आगे थे। उनका दृढ़ मत था कि विभिन्न धर्मों-संप्रदायों के बीच संवाद होना ही चाहिए। वे विभिन्न धर्मों-संप्रदायों की अनेकरूपता को जायज और स्वाभाविक मानते थे। स्वामीजी विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे और सभी को एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरुद्ध थे। वे कहा करते थे — यदि सभी मानव एक ही धर्म को मानने लगें, एक ही पूजा-पद्धति को अपना लें और एक सी नैतिकता का अनुपालन करने लगें तो यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी क्योंकि यह सब हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्राणघातक होगा तथा हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से काट देगा। उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक में गद्यांश का केंद्रीय विचार संक्षेप में व्यक्त होना चाहिए। यहाँ विभिन्न धार्मिक आस्थाओं का सम्मान और उनके बीच संवाद मुख्य विषय है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानें लेखक भारत में अलग-अलग पंथों के साथ रहने की चर्चा करता है। वह एक-दूसरे की आवश्यकताओं और धार्मिक विश्वासों को समझने तथा सम्मान देने पर बल देता है।

चरण 2: शीर्षक का औचित्य समझें स्वामी विवेकानंद भी सभी को एक धर्म में ढालने के बजाय धार्मिक अनेकरूपता और सामंजस्य के समर्थक हैं। इसलिए चुना गया शीर्षक पूरे गद्यांश की भावना को समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है—धार्मिक विविधता और सामंजस्य।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय केवल विवेकानंद का नाम नहीं, विविधता और संवाद के संयुक्त विचार को पकड़ें।

1(ख). टापू किसे कहते हैं? 'टापू की तरह' जीने से लेखक का क्या अभिप्राय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शाब्दिक अर्थ और संदर्भगत अर्थ अलग-अलग स्पष्ट करने से भावार्थ का उत्तर पूरा होता है। यहाँ टापू का प्रयोग सामाजिक अलगाव के प्रतीक के रूप में है।

चरण 1: टापू का शाब्दिक अर्थ टापू चारों ओर से पानी से घिरा हुआ स्थलखंड है। वह आसपास के अन्य भूभागों से जल के कारण अलग दिखाई देता है। इस भौगोलिक अलगाव के आधार पर लेखक ने व्यक्ति के जीवन की तुलना टापू से की है।

चरण 2: प्रयोग का भावार्थ टापू की तरह जीने का अभिप्राय समाज से कटकर, दूसरों से संबंध और संवाद रखे बिना, केवल अपने तक सीमित रहना है। गद्यांश के अनुसार आज ऐसा जीवन संभव नहीं है। अलग-अलग आस्थाओं के लोगों को साथ रहना पड़ता है, इसलिए एक-दूसरे की जरूरतों तथा विश्वासों को समझना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष टापू जल से घिरा स्थलखंड है; टापू की तरह जीना समाज और दूसरों से अलग-थलग होकर जीना है। इस प्रयोग में पानी का वास्तविक घेरा नहीं, बल्कि मनुष्य और समाज के बीच संपर्क का अभाव संकेतित है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में पहले भौगोलिक अर्थ लिखें, फिर उसे सामाजिक अलगाव के रूपक से जोड़ें।

1(ग). 'भारत जैसे देश में यह और भी अधिक ज़रूरी है।' क्या ज़रूरी है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संदर्भ में आए संकेतवाची शब्द यह का संबंध उससे पहले बताई गई पारस्परिक समझ और धार्मिक सम्मान से है। कारण भी इसी गद्यांश से लेना चाहिए।

चरण 1: क्या जरूरी है लोगों का एक-दूसरे को जानना, उनकी जरूरतों और इच्छाओं-आकांक्षाओं को समझना तथा उन्हें महत्त्व देना जरूरी है। साथ ही उनके धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों और अनुष्ठानों का सम्मान करना भी आवश्यक है। इस समझ को विभिन्न समुदायों के बीच संवाद का आधार बनना चाहिए।

चरण 2: क्यों जरूरी है भारत में विभिन्न पंथों और विविध मत-मतांतरों के लोग साथ-साथ रहते हैं। यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है। इसलिए सबकी आस्थाओं का आदर किए बिना आपसी सामंजस्य नहीं बन सकता। विविधता में साथ रहने के लिए एक-दूसरे को समझना विशेष रूप से जरूरी हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की धार्मिक और वैचारिक विविधता के कारण पारस्परिक समझ, संवाद तथा सभी की आस्थाओं का सम्मान अधिक जरूरी है। यही सहअस्तित्व का आधार है।

त्वरित सुझाव: यह जरूरी है पढ़ते समय पिछले वाक्य में लौटें और जरूरत को भारत की विविधता वाले कारण से जोड़ें।

1(घ). स्वामी विवेकानंद को 'अपने समय से बहुत आगे' क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्ति के विषय में दिए गए कथन की पुष्टि गद्यांश में वर्णित उसके विचारों और आचरण से करनी चाहिए। यहाँ विवेकानंद की समन्वयवादी दृष्टि आधार है।

चरण 1: उनके विचार पहचानें स्वामी विवेकानंद विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के बीच संवाद को आवश्यक मानते थे। उनके लिए धार्मिक अनेकरूपता जायज तथा स्वाभाविक थी। वे किसी एक मत को सब पर लागू करने के बजाय अलग-अलग धार्मिक आस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहते थे।

चरण 2: समय से आगे होने का कारण स्पष्ट करें वे सभी मनुष्यों को एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरुद्ध थे। वे समझते थे कि एक जैसी पूजा-पद्धति थोपना धार्मिक और आध्यात्मिक विकास को हानि पहुँचाता है। विविधता के सम्मान और संवाद की यह उदार दृष्टि उनके आचार-विचार में भी दिखाई देती थी; इसी कारण उन्हें अपने समय से आगे कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष धार्मिक विविधता को स्वाभाविक मानने, संवाद और सामंजस्य का समर्थन करने तथा एकरूपता का विरोध करने के कारण विवेकानंद अपने समय से आगे थे।

त्वरित सुझाव: अपने समय से आगे का उत्तर देते हुए संवाद, विविधता की स्वीकृति और सामंजस्य—इन तीन विचारों का उल्लेख करें।

1(ङ). स्वामीजी के मत में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति क्या होगी और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में स्थिति और उसका कारण दोनों माँगे गए हैं। स्वामीजी के कथन में एकरूपता और उससे होने वाली आध्यात्मिक-सांस्कृतिक हानि का सीधा संबंध है।

चरण 1: दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति बताएं स्वामीजी के अनुसार सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह होगी कि सभी मनुष्य एक ही धर्म मानने लगें, एक ही पूजा-पद्धति अपना लें तथा एक जैसी नैतिकता का अनुपालन करें। यहाँ आशय सभी आस्थाओं की स्वाभाविक विविधता समाप्त हो जाने से है।

चरण 2: उसका कारण समझाएं स्वामीजी धार्मिक अनेकरूपता को जायज और स्वाभाविक मानते थे। उनके मत में ऐसी सर्वत्र एकरूपता हमारे धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए प्राणघातक होगी। वह हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी काट देगी। इसीलिए वे अलग-अलग आस्थाओं के बीच सामंजस्य चाहते थे, सभी को एक धर्म में ढालना नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष सबका धर्म, पूजा-पद्धति और नैतिक आचरण एक जैसा हो जाना दुर्भाग्यपूर्ण होगा, क्योंकि इससे आध्यात्मिक विकास बाधित होगा और सांस्कृतिक जड़ों से संबंध कट जाएगा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले तीनों एकरूपताएँ गिनाएँ और फिर विकास की हानि तथा सांस्कृतिक जड़ों से कटने के दोनों कारण लिखें।

1(च). भारत में साथ-साथ रह रहे किन्हीं चार धर्मों और मतों के नाम लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न भारत में साथ रहने वाले चार धर्मों या मतों के नाम माँगता है। नामों से गद्यांश में कही गई धार्मिक विविधता का उदाहरण मिलता है।

चरण 1: माँग पहचानें यहाँ धर्मों का इतिहास या उनकी पूजा-पद्धति समझाना आवश्यक नहीं है। भारत में साथ-साथ रहने वाले किसी भी चार धर्मों के स्पष्ट नाम देने हैं।

चरण 2: चार उदाहरण दें हिंदू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म और ईसाई धर्म भारत में साथ-साथ विद्यमान हैं। ये उदाहरण गद्यांश के उस विचार को स्पष्ट करते हैं कि भारत किसी एक धर्म या मत का देश नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष चार नाम हैं—हिंदू धर्म, इस्लाम धर्म, सिख धर्म और ईसाई धर्म।

त्वरित सुझाव: धर्मों के नाम लिखें, जातियों या भाषाओं के नाम नहीं; उत्तर में चार अलग-अलग नाम अवश्य रखें।

1(छ). गद्यांश से 'अनु-' और 'सम्-' उपसर्ग वाले दो शब्द चुनकर लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द से पहले जुड़कर शब्द बनाता है। प्रश्न में दिए अनु- और सम्- के उदाहरण उसी गद्यांश से चुनने हैं।

चरण 1: अनु- वाला शब्द चुनें गद्यांश में अनुयायी शब्द आया है। इसमें अनु- उपसर्ग है। गद्यांश स्वामीजी के सबको एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरोध का उल्लेख करता है।

चरण 2: सम्- वाला शब्द चुनें गद्यांश में सम्मान शब्द आया है। इसमें सम्- उपसर्ग है। शब्द-रचना को सम् + मान के रूप में समझ सकते हैं; ध्वनि-संधि से सम्मान रूप बनता है। लेखक धार्मिक विश्वासों और अनुष्ठानों को सम्मान देने की बात कहता है।

चरण 3: निष्कर्ष अनु- : अनुयायी; सम्- : सम्मान।

त्वरित सुझाव: उदाहरण गद्यांश से ही चुनें और हर उपसर्ग के सामने उसका संबंधित शब्द अलग से लिखें।

1(ज). मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए — स्थापित, नैतिक [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यय मूल शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाता है।
- प्रत्यय जोड़ने पर मूल शब्द के स्वर में परिवर्तन या अंतिम अंश का लोप भी हो सकता है।

चरण 1: स्थापित का विच्छेद स्थापित में मूल शब्द स्थापना और प्रत्यय इत है। प्रत्यय लगने पर स्थापना का अंतिम अंश हटता है और स्थापित रूप बनता है। यहाँ शब्द का अर्थ किसी वस्तु या संस्था को स्थापित किया हुआ है।

चरण 2: नैतिक का विच्छेद नैतिक में मूल शब्द नीति और प्रत्यय इक है। इक प्रत्यय जुड़ने पर नीति के प्रथम स्वर में वृद्धि होकर नै और अंतिम स्वर का लोप होता है। केवल अंतिम अक्षर काटने के बजाय शब्द की निर्माण-प्रक्रिया पहचाननी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष स्थापित = स्थापना + इत; नैतिक = नीति + इक।

त्वरित सुझाव: प्रत्यय अलग करते समय बदले हुए स्वर को मूल शब्द के स्वर में वापस पहचानिए।

1(झ). यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है। उपर्युक्त वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्द से जुड़ते हैं।
- रूपांतरण में मूल कथन का आशय और निषेध सुरक्षित रहना चाहिए।

चरण 1: मूल कथन का आशय मूल वाक्य देश को केवल एक धर्म, एक मत या एक विचारधारा की संपत्ति मानने का निषेध करता है। तीनों पद एक ही निषेध से जुड़े हैं। संयुक्त रूप में इन्हें स्वतंत्र कथनों के रूप में व्यक्त करना होगा।

चरण 2: स्वतंत्र उपवाक्य जोड़ना हर उपवाक्य में अपना कर्ता और क्रिया रखने से स्वतंत्र कथन बनता है। न तो, न और न ही से तीनों निषेध जोड़ने पर मूल अर्थ सुरक्षित रहता है। केवल संज्ञाओं के बीच और जोड़ देने से संयुक्त वाक्य नहीं बनता।

चरण 3: निष्कर्ष यह देश न तो किसी एक धर्म का है, न यह किसी एक मत का है और न ही यह किसी एक विचारधारा का है।

त्वरित सुझाव: संयुक्त वाक्य में हर जुड़े कथन के लिए अलग क्रिया की पहचान अवश्य कीजिए।

1(ञ). समास नाम लिखिए — पूजा-पद्धति, मत-मतांतर [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास का प्रकार पहचानने के लिए पहले पदों का अर्थपूर्ण विग्रह किया जाता है।
- तत्पुरुष में कारक-चिह्न का लोप और द्वंद्व में पदों के बीच तथा या और का संबंध होता है।

चरण 1: पूजा-पद्धति का विग्रह पूजा-पद्धति का अर्थ पूजा की पद्धति है। यहाँ पूजा और पद्धति के बीच की संबंधसूचक विभक्ति का लोप है। उत्तरपद पद्धति प्रधान है और पहले पद से यह स्पष्ट होता है कि पद्धति किसकी है।

चरण 2: मत-मतांतर का विग्रह मत-मतांतर का विग्रह मत और अन्य मत है। दोनों पद विभिन्न विचारों का बोध कराते हैं और और द्वारा जुड़े हैं। दोनों पदों की प्रधानता के कारण यह द्वंद्व समास है। इसे केवल शब्दों के दोहराव के आधार पर किसी दूसरे समास में नहीं रखना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पूजा-पद्धति: षष्ठी तत्पुरुष समास। मत-मतांतर: द्वंद्व समास।

त्वरित सुझाव: पहले की अथवा और लगाकर विग्रह करें; फिर उसी संबंध से समास का नाम तय करें।

1(ट). अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए — प्राणघातक, अनुष्ठान [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-प्रयोग से शब्द का अर्थ और संदर्भ दोनों स्पष्ट होने चाहिए।
- प्राणघातक का अर्थ प्राण लेने वाला तथा अनुष्ठान का अर्थ विधिपूर्वक किया जाने वाला धार्मिक कर्म है।

चरण 1: प्राणघातक का प्रयोग तेज़ गति से वाहन चलाते समय की गई छोटी-सी लापरवाही भी प्राणघातक दुर्घटना का कारण बन सकती है। इस वाक्य में प्राणघातक दुर्घटना की गंभीरता बताने वाला विशेषण है। इससे जीवन नष्ट होने की आशंका स्पष्ट होती है।

चरण 2: अनुष्ठान का प्रयोग परिवार के सभी सदस्यों ने मिलकर घर में धार्मिक अनुष्ठान संपन्न किया। यहाँ अनुष्ठान किसी एक सामान्य काम का नहीं, विधिपूर्वक किए गए धार्मिक आयोजन का बोध कराता है। वाक्य में शब्द का स्वाभाविक और अर्थपूर्ण उपयोग हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राणघातक: विषैली गैस का रिसाव प्राणघातक सिद्ध हुआ। अनुष्ठान: मंदिर में विशेष अनुष्ठान संपन्न हुआ।

त्वरित सुझाव: प्रयोग में ऐसा संदर्भ चुनें जिससे शब्द का सही अर्थ अपने आप स्पष्ट हो जाए।

2(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'सर! पहचाना मुझे?' बारिश में भीगता आया कोई कपड़े कीचड़-सने और बालों में पानी। बैठा। छन-भर सुस्ताया। बोला, नभ की ओर देख — 'गंगा मैया पाहुन बनकर आई थीं, झोंपड़ी में रहकर लौट गई। नैहर आई बेटी की भाँति चार दीवारों में कुदकती-फुदकती रहीं खाली हाथ वापस कैसे जातीं! घरवाली तो बच गई — दीवारें ढहीं, चूल्हा बुझा, बरतन-भाँडे — जो भी था सब चला गया। प्रसाद-रूप में बचा है नैनों में थोड़ा खारा पानी पत्नी को साथ ले, सर, अब लड़ रहा हूँ ढही दीवार खड़ी कर रहा हूँ कादा-कीचड़ निकाल फेंक रहा हूँ।' मेरा हाथ जेब की ओर जाते देख वह उठा, बोला — 'सर, पैसे नहीं चाहिए। जरा अकेलापन महसूस हुआ तो चला आया घर-गृहस्थी चौपट हो गई पर रीढ़ की हड्डी मज़बूत है सर! पीठ पर हाथ थपकी देकर आशीर्वाद दीजिए — लड़ते रहो।' बाढ़ की तुलना मायके आई हुई बेटी से क्यों की गई है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बाढ़ को गंगा मैया और मायके आई बेटी के रूप में चित्रित किया गया है।
- उपमा में दोनों स्थितियों की समानता तथा उसके भीतर छिपी पीड़ा को समझना आवश्यक है।

चरण 1: बेटी के आने की समानता मायके आई बेटी घर में अधिकार और अपनापन लेकर आती है तथा इधर-उधर चंचलता से घूमती है। उसी प्रकार बाढ़ का पानी झोंपड़ी की चार दीवारों के भीतर कुदकता-फुदकता रहा। वक्ता विनाशकारी घटना को भी आत्मीय संबंध की भाषा में कहता है।

चरण 2: विदा होने का संकेत बेटी को मायके से खाली हाथ नहीं विदा किया जाता। बाढ़ भी घर का सारा सामान अपने साथ बहाकर ले गई। खाली हाथ वापस कैसे जातीं कथन में इसी समानता से विनाश की करुण विडंबना सामने आती है।

चरण 3: निष्कर्ष बाढ़ घर में मायके आई बेटी की तरह चंचलता से घूमी और जाते समय घर का सामान साथ ले गई; इसीलिए यह तुलना की गई है।

त्वरित सुझाव: उपमा समझाते समय कुदकने-फुदकने और खाली हाथ न लौटने, दोनों समानताओं को जोड़ें।

2(ख). बाढ़ का क्या प्रभाव पड़ा? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रभाव संबंधी उत्तर में काव्यांश में बताए गए नुकसान का उल्लेख आवश्यक है।
- वस्तुओं की हानि और व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अलग पहचानने से उत्तर स्पष्ट बनता है।

चरण 1: घर को हुई क्षति बाढ़ में झोंपड़ी की दीवारें ढह गईं और चूल्हा बुझ गया। बरतन-भाँडे तथा घर का जो भी सामान था, सब बह गया। इन बिंबों से स्पष्ट है कि भोजन बनाने से लेकर रहने तक की व्यवस्था नष्ट हो गई थी।

चरण 2: जीवन पर पड़ा प्रभाव पत्नी बच गई, पर घर-गृहस्थी चौपट हो गई और आँखों में आँसू रह गए। इसके बाद आगन्तुक पत्नी को साथ लेकर कीचड़ निकालता और गिरी हुई दीवार खड़ी करता है। उसका पुनर्निर्माण में लगना नुकसान की गंभीरता को भी स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाढ़ से घर की दीवारें ढह गईं, चूल्हा बुझ गया और बरतन-भाँडों सहित सामान बह गया। पत्नी बच गई, पर पूरी गृहस्थी उजड़ गई।

त्वरित सुझाव: बाढ़ का प्रभाव लिखते समय दीवार, चूल्हे और सामान की हानि का स्पष्ट उल्लेख करें।

2(ग). 'सर' का हाथ जेब की ओर क्यों गया होगा? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र की क्रिया का कारण उसके सामने उपस्थित स्थिति से समझा जाता है।
- यहाँ हाथ का जेब की ओर जाना आर्थिक सहायता देने की इच्छा का संकेत है।

चरण 1: सर ने क्या सुना सर ने आगन्तुक से बाढ़ में घर की दीवारों के गिरने और सारा सामान बह जाने का हाल सुना। इस संकट ने उसकी गृहस्थी चौपट कर दी थी। ऐसी विपत्ति देखकर सर के मन में उसके प्रति सहानुभूति और सहायता की भावना जागी।

चरण 2: प्रतिक्रिया का प्रमाण आगन्तुक ने हाथ को जेब की ओर जाते देखकर तुरंत कहा कि उसे पैसे नहीं चाहिए। उसकी यह प्रतिक्रिया बताती है कि वह सर के रुपये निकालने के इरादे को समझ गया था। इसलिए जेब की ओर हाथ जाने का कारण आर्थिक सहायता देना है।

चरण 3: निष्कर्ष आगन्तुक की उजड़ी गृहस्थी और कठिन स्थिति सुनकर सर उसे आर्थिक सहायता देना चाहते थे; इसलिए उनका हाथ रुपये निकालने के लिए जेब की ओर गया होगा।

त्वरित सुझाव: क्रिया का अनुमान पात्र की अगली प्रतिक्रिया से जाँचें: पैसे नहीं चाहिए इसका सीधा संकेत है।

2(घ). आगन्तुक सर के घर क्यों आया था? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र के आने का उद्देश्य उसके अपने कथन से निर्धारित करना चाहिए।
- आगन्तुक के लिए आत्मीयता और मनोबल का सहारा आर्थिक सहायता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

चरण 1: आने का स्पष्ट कारण आगन्तुक कहता है कि उसे थोड़ा अकेलापन महसूस हुआ, इसलिए वह चला आया। बाढ़ से घर-गृहस्थी उजड़ने के बाद वह अपने परिचित और सम्मानित सर के पास मन का बोझ हल्का करने तथा आत्मीय सहारा पाने आया था।

चरण 2: वह क्या चाहता था वह पैसे लेने से इनकार करता है और पीठ पर हाथ रखकर संघर्ष करते रहने का आशीर्वाद माँगता है। यह उसकी सहायता की वास्तविक जरूरत बताता है। वह अपने प्रयासों के लिए प्रोत्साहन चाहता है ताकि पत्नी के साथ फिर से घर बसा

सके।

चरण 3: निष्कर्ष आगन्तुक अकेलापन दूर करने और सर का आत्मीय सहारा पाने आया था। वह पैसे नहीं, संघर्ष करते रहने के लिए थपकी और आशीर्वाद चाहता था।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य बताते समय अकेलेपन के साथ आशीर्वाद की इच्छा जोड़ें; पैसे माँगना न लिखें।

2(ङ). कैसे कह सकते हैं कि आगन्तुक स्वाभिमानी और संघर्षशील व्यक्ति है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषता को पात्र की कथनी और करनी के प्रमाण से स्पष्ट करना चाहिए।
- स्वाभिमान सहायता के प्रति उसके दृष्टिकोण से और संघर्षशीलता पुनर्निर्माण के प्रयास से प्रकट होती है।

चरण 1: स्वाभिमान का प्रमाण सर का हाथ जेब की ओर जाते देखकर आगन्तुक स्पष्ट कहता है कि उसे पैसे नहीं चाहिए। वह घर उजड़ने के बावजूद अपनी रीढ़ की मजबूती की बात करता है। इससे उसका आत्मसम्मान और अपने श्रम पर भरोसा दिखाई देता है।

चरण 2: संघर्षशीलता का प्रमाण वह पत्नी के साथ ढही दीवार फिर खड़ी कर रहा है और घर से कादा-कीचड़ निकाल रहा है। विपत्ति में हार मानने के बजाय वह जीवन को सँवारने में जुटा है। सर से वह इसी संघर्ष को जारी रखने के लिए थपकी और आशीर्वाद माँगता है।

चरण 3: निष्कर्ष पैसे लेने से इनकार करना उसका स्वाभिमान है। पत्नी के साथ दीवार खड़ी करना, कीचड़ निकालना और संघर्ष का आशीर्वाद माँगना उसकी संघर्षशीलता के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: स्वाभिमान के लिए पैसे से इनकार और संघर्ष के लिए घर बनाने का काम अलग-अलग प्रमाण दें।

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबंध लिखिए: (क) भ्रष्टाचार का विरोध (ख) 24x7 चैनलों का शोर (ग) संपन्न भारत (घ) मेरा प्रिय सिने-सितारा [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं। भाषा स्पष्ट, विचार मौलिक और उदाहरण विषय के अनुकूल होने चाहिए।
- यहाँ चारों विषयों के नमूना निबंध दिए गए हैं। परीक्षा में निर्देशानुसार किसी एक विषय का चयन करके उसी पर संगठित उत्तर लिखना है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा निबंध का उपयुक्त शीर्षक देकर आरंभ में विषय का परिचय दें। बीच के अनुच्छेदों में कारण, प्रभाव और आवश्यक उपायों को तर्कपूर्ण क्रम में रखें। अंतिम अनुच्छेद विषय के अनुरूप निष्कर्ष दे। भ्रष्टाचार पर नागरिक उत्तरदायित्व, चैनलों पर सूचना और सनसनी का अंतर, संपन्नता पर समावेशी विकास तथा प्रिय अभिनेता पर उसके कलात्मक गुण केंद्र में रखे जा सकते हैं।

चरण 2: नमूना निबंध: भ्रष्टाचार का विरोध **भ्रष्टाचार का विरोध**

भ्रष्टाचार केवल धन का अनुचित लेन-देन नहीं, सार्वजनिक विश्वास का हनन भी है। जब कोई व्यक्ति निजी लाभ के लिए अपने अधिकार का दुरुपयोग करता है, तो उसका दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है। रिश्वत, भाई-भतीजावाद और सार्वजनिक धन की हेराफेरी इसके परिचित रूप हैं।

भ्रष्ट व्यवस्था में योग्य व्यक्ति अवसर से वंचित रह जाता है। गरीब को अपना वैध काम करवाने के लिए भी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। विद्यालय, अस्पताल और सड़क जैसी आवश्यक सुविधाओं का स्तर गिरता है। इससे लोगों का संस्थाओं पर भरोसा कम होता है और

ईमानदार आचरण कठिन प्रतीत होने लगता है।

इस बुराई का विरोध केवल भाषणों से नहीं हो सकता। सरकारी कामकाज में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और समयबद्ध सेवा आवश्यक हैं। नागरिकों को अनुचित माँग का समर्थन करने के बजाय उसकी शिकायत करनी चाहिए। सार्वजनिक कार्यों के खर्च और गुणवत्ता पर सामाजिक निगरानी भी उपयोगी है। विद्यालय और परिवार बच्चों को सत्यनिष्ठा का व्यावहारिक संस्कार दें।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष अपने आचरण से शुरू होता है। जब नागरिक सुविधा के लिए बेईमानी स्वीकार नहीं करेंगे और संस्थाएँ दोषियों पर निष्पक्ष कार्रवाई करेंगी, तभी स्वच्छ तथा न्यायपूर्ण समाज बन सकेगा।

चरण 3: नमूना निबंध: 24x7 चैनलों का शोर **24x7 चैनलों का शोर**

समाचार चैनल चौबीसों घंटे हमें देश-दुनिया से जोड़ते हैं। किसी आपदा की सूचना, महत्वपूर्ण घोषणा या जनसमस्या का प्रसारण तत्काल संभव हो जाता है। किंतु निरंतर प्रसारण की होड़ ने समाचारों के साथ शोर भी बढ़ाया है।

दर्शकों को बाँधे रखने की प्रतिस्पर्धा में कई बार छोटी घटना को असाधारण संकट बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। एक ही दृश्य बार-बार दिखाना, उत्तेजक शीर्षक चलाना और बहस में सभी वक्ताओं का एक साथ बोलना सूचना को अस्पष्ट कर देता है। दर्शक घटना का तथ्य समझने के बजाय उत्तेजना या भय का अनुभव करता है। गंभीर सामाजिक प्रश्न कभी-कभी मनोरंजक विवादों के पीछे छूट जाते हैं।

मीडिया की स्वतंत्रता लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन उसके साथ तथ्य-जाँच और संवेदनशीलता भी आवश्यक हैं। समाचार और राय का स्पष्ट अंतर हो। बहस का संचालन संयम से किया जाए और संबंधित पक्षों को पर्याप्त अवसर मिले। किसी पीड़ित की गरिमा या निजता केवल दर्शक संख्या बढ़ाने के लिए भंग नहीं होनी चाहिए।

दर्शकों की भी जिम्मेदारी है कि वे सनसनी के बजाय विश्वसनीय पत्रकारिता को महत्त्व दें। समाचार चैनलों की सफलता केवल लगातार बोलते रहने में नहीं, नागरिक को सही तथ्य समझाने में है। सूचना का प्रकाश तभी उपयोगी है, जब शोर उसे ढक न ले।

चरण 4: नमूना निबंध: संपन्न भारत **संपन्न भारत**

संपन्न भारत का अर्थ केवल बड़ी इमारतों, अधिक उत्पादन या बढ़ती आय वाला देश नहीं है। सच्ची संपन्नता तब है जब प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्ण जीवन, शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अवसर मिलें। आर्थिक प्रगति का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए।

भारत की शक्ति उसके परिश्रमी नागरिकों, विविध ज्ञान-परंपराओं और युवा जनसंख्या में निहित है। खेती, उद्योग और सेवा क्षेत्र एक-दूसरे के सहयोग से देश को आगे बढ़ा सकते हैं। किसान को उचित मूल्य, श्रमिक को सुरक्षित कार्यस्थल और युवा को उपयोगी कौशल मिले तो उत्पादन के साथ जीवन का स्तर भी सुधरेगा।

इसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार आवश्यक है। महिलाओं को समान अवसर देना, ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाएँ पहुँचाना और छोटे उद्यमों को प्रोत्साहन देना भी जरूरी है। विकास करते समय जल, भूमि और वनों की रक्षा करनी होगी, क्योंकि पर्यावरण के विनाश पर टिकी समृद्धि स्थायी नहीं होती।

संपन्नता का सामाजिक पक्ष भी है। आपसी विश्वास, वैज्ञानिक दृष्टि, ईमानदार प्रशासन और सांस्कृतिक उदारता देश को मजबूत बनाते हैं। हमें ऐसी प्रगति चाहिए जिसमें कोई भूखा न सोए और किसी प्रतिभा को अवसर का अभाव न रोक सके। समान अवसर और साझा उत्तरदायित्व ही संपन्न भारत के निर्माण की आधारशिला हैं।

चरण 5: नमूना निबंध: मेरा प्रिय सिने-सितारा **मेरा प्रिय सिने-सितारा**

सिनेमा मनोरंजन के साथ जीवन के अनेक अनुभवों से परिचित कराता है। मुझे वे कलाकार अधिक प्रभावित करते हैं जो अपने अभिनय से पात्र को विश्वसनीय बना देते हैं। इस दृष्टि से मेरे प्रिय सिने-सितारे आमिर खान हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण अलग-अलग भूमिकाओं में दिखाई देने वाली मेहनत है।

लगान में उनका पात्र सामूहिक प्रयास और साहस की भावना जगाता है। तारे ज़मीन पर में शिक्षक की भूमिका बच्चे की कठिनाई को संवेदनशील दृष्टि से समझने का संदेश देती है। इन भूमिकाओं में केवल संवाद बोलना नहीं, भावों, हावभाव और परिस्थितियों को समझकर अभिनय करना दिखाई देता है।

मुझे उनकी फिल्मों की यह विशेषता अच्छी लगती है कि वे मनोरंजन के साथ विचार का अवसर भी देती हैं। शिक्षा, प्रतिभा और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे विषय दर्शक को अपने अनुभवों पर सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। अभिनय की तैयारी, पात्र के अनुरूप व्यवहार और काम में अनुशासन ऐसे गुण हैं जिनसे विद्यार्थी भी सीख सकते हैं।

किसी अभिनेता को पसंद करने का अर्थ उसके हर विचार या हर फिल्म को श्रेष्ठ मान लेना नहीं है। दर्शक की अपनी विवेकपूर्ण दृष्टि बनी

रहनी चाहिए। मेरे लिए प्रिय सिने-सितारा वही है जिसका काम आनंद देने के साथ संवेदना बढ़ाए। आमिर खान का अभिनय मुझे इसी कारण विशेष प्रिय है।

चरण 6: निष्कर्ष इन नमूनों में प्रत्येक विषय का परिचय, क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार दिया गया है। उत्तर लिखते समय चुने हुए एक विषय की सीमा में रहकर अपने विचार सुसंगत अनुच्छेदों में प्रस्तुत करें।

त्वरित सुझाव: विषय चुनते ही भूमिका, तीन मुख्य विचार और उपसंहार की छोटी रूपरेखा बना लें; इससे निबंध भटकता नहीं है।

4. सड़क मरम्मत कार्य में निर्धारित बजट और उसके उपयोग की जानकारी सूचना का अधिकार कानून के अंतर्गत प्राप्त करने के लिए दिल्ली नगर निगम के आयुक्त को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, मुख्य निवेदन और हस्ताक्षर क्रम से दिए जाते हैं।
- सूचना माँगने वाला पत्र स्पष्ट रूप से अभिलेखों और व्यय के विवरण का अनुरोध करता है। भाषा विनम्र, वस्तुनिष्ठ तथा प्रश्न के उद्देश्य तक सीमित रखनी चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और सूचना की रूपरेखा प्रेषक के बाद दिल्ली नगर निगम के आयुक्त का पद और पता लिखें। विषय में सड़क मरम्मत कार्य के बजट तथा उपयोग की सूचना माँगने का उद्देश्य स्पष्ट करें। मुख्य भाग में संबंधित सड़क और अवधि की पहचान देकर स्वीकृत बजट, आवंटन, वास्तविक खर्च तथा खर्च से जुड़े अभिलेख माँगें। इससे अधिकारी को आवश्यक सूचना पहचानने में सुविधा होगी।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 25, विकास नगर
दिल्ली–110059
19 मार्च 2012

सेवा में,
आयुक्त महोदय,
दिल्ली नगर निगम,
दिल्ली।

विषय: सूचना का अधिकार कानून के अंतर्गत सड़क मरम्मत के बजट एवं व्यय की जानकारी प्राप्त करने हेतु।

महोदय,

मैं विकास नगर का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र की मुख्य सड़क की मरम्मत हाल में कराई गई है। इस कार्य के लिए निर्धारित बजट और उसके उपयोग की जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ। कृपया सूचना का अधिकार कानून के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2011–12 में इस सड़क की मरम्मत से संबंधित निम्नलिखित सूचनाएँ उपलब्ध कराने की कृपा करें।

कृपया स्वीकृत कुल बजट, स्वीकृति की तिथि तथा आवंटित राशि का विवरण दें। इसके साथ कार्यादेश, स्वीकृत लागत और मरम्मत के निर्धारित कार्यों की प्रतियाँ प्रदान करें। अब तक हुए वास्तविक व्यय का मदवार विवरण तथा संबंधित बिलों और भुगतान अभिलेखों की प्रमाणित प्रतियाँ भी उपलब्ध कराएँ। यदि कोई राशि शेष है, तो उसका विवरण भी दें।

इन सूचनाओं से नागरिक सार्वजनिक धन के उपयोग को समझ सकेंगे। कृपया जानकारी मेरे उपर्युक्त पते पर उपलब्ध कराएँ और आवेदन से संबंधित आवश्यक औपचारिकताओं की सूचना दें।

धन्यवाद।
भवदीय,
अभिषेक कुमार

25, विकास नगर, दिल्ली।

चरण 3: पत्र की उपयुक्तता की जाँच पत्र में सड़क की पहचान, संबंधित अवधि, निर्धारित राशि और वास्तविक उपयोग सभी स्पष्ट हैं। खर्च के प्रमाण माँगने से निवेदन केवल सामान्य जानकारी तक सीमित नहीं रहता। शिकायत या आरोप लगाने के बजाय अभिलेखों का विनम्र अनुरोध किया गया है। काल्पनिक नाम और पता नमूने को पूर्ण औपचारिक रूप देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार आयुक्त को संबोधित औपचारिक पत्र में सड़क मरम्मत के स्वीकृत बजट, वास्तविक व्यय और संबंधित अभिलेखों की सूचना स्पष्ट रूप से माँगी गई है।

त्वरित सुझाव: सूचना माँगते समय सड़क और अवधि अवश्य लिखें तथा बजट, खर्च और प्रमाणित अभिलेखों को अलग-अलग स्पष्ट करें।

अथवा

4. देश में बढ़ रही महँगाई के दो कारणों और रोकने के दो उपायों का उल्लेख करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और प्रशासन का ध्यान आकर्षित करने के लिए लिखा जाता है। भाषा विनम्र, तथ्यपरक और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- इस पत्र में महँगाई के दो स्पष्ट कारण और उसे रोकने के दो व्यावहारिक उपाय देना आवश्यक है। पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पता, विषय, संबोधन और हस्ताक्षर का क्रम रखा जाता है।

चरण 1: विषय और सामग्री की योजना महँगाई का प्रभाव दैनिक आवश्यकताओं पर दिखाना चाहिए। कारणों में आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी तथा उत्पादन और परिवहन की बढ़ती लागत ली जा सकती है। इनके अनुरूप उपाय होंगे जमाखोरी पर कठोर कार्रवाई और उत्पादन तथा आपूर्ति व्यवस्था में सुधार। इससे पत्र केवल शिकायत बनकर नहीं रह जाता, बल्कि समाधान भी प्रस्तुत करता है।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति नगर
नई दिल्ली
19 मार्च, 2012
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली
विषय: बढ़ती महँगाई पर नियंत्रण की आवश्यकता।
महोदय,
आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान देश में लगातार बढ़ रही महँगाई की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। अनाज, दाल, दूध और सब्जियों के बढ़ते मूल्य सामान्य परिवारों का बजट बिगाड़ रहे हैं। सीमित आय वाले लोगों को आवश्यक वस्तुओं में भी कटौती करनी पड़ रही है।
इस स्थिति का पहला प्रमुख कारण आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी है। कुछ व्यापारी कृत्रिम अभाव उत्पन्न करके अधिक लाभ कमाते हैं। दूसरा कारण ईंधन, उत्पादन और परिवहन की बढ़ती लागत है, जिसका भार अंततः उपभोक्ता पर पड़ता है।
महँगाई रोकने के लिए पहला उपाय जमाखोरों के विरुद्ध नियमित जाँच और कठोर कार्रवाई है। दूसरा उपाय उत्पादन बढ़ाकर भंडारण तथा वितरण व्यवस्था सुधारना है, जिससे वस्तुएँ समय पर और उचित मूल्य पर उपलब्ध हो सकें।
आशा है कि आप इस समस्या को अपने पत्र में स्थान देकर सरकार और जनता का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करेंगे।
धन्यवाद।

भवदीय,
अमित कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में महँगाई के दो कारणों के रूप में जमाखोरी और बढ़ती उत्पादन-परिवहन लागत तथा दो उपायों के रूप में प्रभावी कार्रवाई और उत्पादन-आपूर्ति में सुधार का उल्लेख किया गया है। औपचारिक प्रारूप के साथ सार्वजनिक हित का निवेदन भी पूरा होता है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र लिखते समय प्रश्न में माँगे गए कारणों और उपायों को अलग-अलग स्पष्ट वाक्यों में लिखें तथा अंत में समस्या को समाचार पत्र में स्थान देने का आग्रह करें।

5. 'भ्रष्टाचार के विरोध में उमड़ता जन सैलाब' अथवा 'पढ़ाई-लिखाई से वंचित बचपन' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, सजीव वर्णन और संवेदनशील दृष्टि के साथ प्रस्तुत करता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, रोचक आरंभ, विषय का विस्तार और प्रभावशाली समापन होता है।
- प्रश्न में दिए दोनों विषयों के स्वतंत्र आदर्श आलेख प्रस्तुत हैं। भ्रष्टाचार वाले विषय में जनाकांक्षा और नागरिक जिम्मेदारी तथा वंचित बचपन वाले विषय में बालक के अनुभव और शिक्षा की आवश्यकता को केंद्र बनाया गया है।

चरण 1: आलेखों की सामग्री और शैली पहले विषय का आरंभ सार्वजनिक विरोध के दृश्य से किया जा सकता है। आगे भ्रष्टाचार से होने वाली कठिनाइयाँ, जनभागीदारी और बदलाव के व्यावहारिक रास्ते आएँगे। दूसरे विषय का आरंभ विद्यालय जाते बच्चे और काम करते बच्चे के अंतर से होगा। फिर वंचना के कारण, उसके प्रभाव और शिक्षा तक पहुँच के उपाय आएँगे। दोनों में कल्पित दृश्य केवल विषय को जीवंत करने के लिए हैं; कोई अप्रमाणित आँकड़ा या किसी वास्तविक आयोजन का दावा नहीं किया गया है।

चरण 2: पहला विकल्प: भ्रष्टाचार के विरोध में उमड़ता जन सैलाब भ्रष्टाचार के विरोध में उमड़ता जन सैलाब
— अमित कुमार
हाथों में तख्तियाँ हैं और आँखों में उम्मीद। सड़क पर उमड़ी भीड़ में युवा भी हैं, बुजुर्ग भी। सबकी एक ही माँग है—ईमानदार व्यवस्था और जवाबदेह शासन। यह केवल नारों का शोर नहीं, रोजमर्रा के अपमान से मुक्ति की पुकार है।
कभी प्रमाणपत्र बनवाने के लिए चक्कर, कभी आवश्यक सेवा के बदले रिश्वत की माँग! भ्रष्टाचार सबसे अधिक चोट उस व्यक्ति को पहुँचाता है जिसके पास न पैसा है, न प्रभावशाली परिचय। जनता का आक्रोश बताता है कि लोग इस अन्याय को सामान्य व्यवहार मानने को तैयार नहीं हैं।
पर परिवर्तन केवल भीड़ जुटने से नहीं आएगा। सरकारी कामकाज में पारदर्शिता, शिकायतों का समयबद्ध निपटारा और दोषियों पर निष्पक्ष कार्रवाई आवश्यक है। नागरिकों को भी अनुचित लाभ लेने और रिश्वत देने की प्रवृत्ति छोड़नी होगी। सूचना माँगना, गलत कार्य का विरोध करना और ईमानदार आचरण अपनाना आंदोलन को दैनिक जीवन से जोड़ता है।
जन सैलाब की असली शक्ति उसकी शांतिपूर्ण दृढ़ता है। जब सार्वजनिक आक्रोश व्यक्तिगत ईमानदारी में बदलेगा, तभी स्वच्छ व्यवस्था का सपना साकार होगा।

चरण 3: दूसरा विकल्प: पढ़ाई-लिखाई से वंचित बचपन किताबों को तरसता बचपन
— अमित कुमार
सुबह की धूप में बच्चे बस्ता सँभाले विद्यालय जा रहे हैं। पास की चाय की दुकान पर एक बच्चा गिलास धो रहा है। उसकी निगाह कुछ देर उन बस्तों पर ठहरती है और फिर काम पर लौट जाती है। जिन हाथों में पेंसिल होनी चाहिए, वे जीविका का बोझ सँभाल रहे हैं।
गरीबी, पारिवारिक विवशता, बालश्रम और आसपास सुलभ विद्यालय का अभाव अनेक बच्चों को शिक्षा से दूर कर देते हैं। कुछ बच्चे विद्यालय पहुँचते भी हैं तो काम के दबाव या सहयोग न मिलने के कारण पढ़ाई छोड़ देते हैं। वे केवल अक्षर-ज्ञान से नहीं, खेल, मित्रता और आत्मविश्वास के अवसरों से भी वंचित हो जाते हैं।
ऐसे बचपन को दया से अधिक अवसर चाहिए। परिवारों को सहायता, विद्यालयों में अपनापन, पढ़ाई की आवश्यक सामग्री और कमजोर

बच्चों के लिए अतिरिक्त सहयोग मिलना चाहिए। समाज को बालश्रम के स्थान पर शिक्षा का समर्थन करना होगा।
हर बच्चे के भीतर सपने हैं। आवश्यकता उन सपनों तक पहुँचने का रास्ता खोलने की है। जिस दिन दुकान पर काम करता बच्चा भी विद्यालय की कतार में मुसकराएगा, उस दिन हमारी प्रगति अधिक सार्थक होगी।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों विकल्पों में मानवीय दृश्य से आरंभ करके सामाजिक समस्या, उसके प्रभाव और समाधान को जोड़ा गया है। आकर्षक शीर्षक तथा विचारपूर्ण समापन फ़ीचर को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर को केवल तर्कों की सूची न बनाएँ; किसी छोटे मानवीय दृश्य से आरंभ करें और उसी संवेदना को अंतिम पंक्तियों में समाधान से जोड़ दें।

6(क). 'किसानों की समस्याएँ' अथवा 'कन्या-भ्रूण-हत्या' विषय पर एक आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का परिचय, समस्या के कारण, प्रभाव तथा समाधान क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत होते हैं।
- शीर्षक और लेखक का नाम देकर विचारों को तथ्यपरक, संवेदनशील तथा स्पष्ट भाषा में विकसित करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विकास दोनों विकल्पों के नमूने नीचे दिए गए हैं। परीक्षा में चुने हुए एक विषय पर आलेख लिखना है। पहले विषय में खेती की अनिश्चितता, लागत, ऋण और विपणन की समस्या से समाधान तक जाएँ। दूसरे में लैंगिक भेदभाव, उसके सामाजिक प्रभाव और मानसिकता में बदलाव पर विचार रखें।

चरण 2: पहले विषय का पूर्ण आलेख **किसानों की समस्याएँ**

लेखक: अजय कुमार

भारत की बड़ी आबादी की आजीविका खेती से जुड़ी है। किसान समाज को भोजन उपलब्ध कराता है, फिर भी उसका अपना जीवन अनेक अनिश्चितताओं से घिरा रहता है। कृषि की उन्नति के बिना देश की समृद्धि अधूरी है।

किसानों की प्रमुख समस्या मौसम पर निर्भरता है। कहीं सूखा तो कहीं अतिवृष्टि उनकी मेहनत नष्ट कर देती है। पर्याप्त सिंचाई और जल-संरक्षण के अभाव में छोटी जोत वाला किसान विशेष रूप से संकट में पड़ता है। बीज, खाद, बिजली और परिवहन की बढ़ती लागत उसकी आमदनी घटाती है। समय पर सस्ता ऋण न मिलने पर वह महँगा कर्ज लेने को विवश होता है।

फसल तैयार होने के बाद भी परेशानी समाप्त नहीं होती। भंडारण की कमी और बिचौलियों पर निर्भरता के कारण किसान को उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। जल्दी खराब होने वाली उपज बेचने की मजबूरी उसकी सौदेबाजी की शक्ति कम करती है।

इस स्थिति में सुधार के लिए सिंचाई, सुलभ ऋण, प्रभावी फसल बीमा और स्थानीय भंडारण सुविधाएँ आवश्यक हैं। सहकारी संस्थाओं और किसान समूहों से खरीद तथा बिक्री की लागत घट सकती है। कृषि संबंधी उपयोगी जानकारी और बाजार तक सीधी पहुँच भी बढ़ानी होगी। किसान को केवल सहानुभूति नहीं, उसकी मेहनत का सम्मानजनक प्रतिफल चाहिए।

चरण 3: दूसरे विषय का पूर्ण आलेख **कन्या-भ्रूण-हत्या: समानता पर प्रहार**

लेखिका: नेहा शर्मा

बेटी का जन्म किसी परिवार में प्रसन्नता का अवसर होना चाहिए, लेकिन पुत्र को अधिक महत्त्व देने वाली मानसिकता कई बार उसके जीवन को जन्म से पहले ही समाप्त कर देती है। कन्या-भ्रूण-हत्या मानवीय संवेदना और स्त्री की गरिमा पर गंभीर प्रहार है।

इस समस्या की जड़ लैंगिक भेदभाव है। दहेज की चिंता, पुत्र को वंश का एकमात्र वाहक मानना और बेटी को आर्थिक बोझ समझना ऐसी सोच को बढ़ाते हैं। गर्भस्थ शिशु के लिंग की जाँच कराने और उसके आधार पर गर्भपात करवाने के लिए परिवार की महिला पर दबाव डालना भी उसके अधिकारों का हनन है। इस अन्याय का दोष केवल माँ पर डालना अनुचित है; परिवार और समाज की जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी है।

बेटियों की लगातार उपेक्षा से समाज में स्त्री-पुरुष संतुलन बिगड़ता है और महिलाओं के प्रति असमान व्यवहार को बल मिलता है। शिक्षा तथा आर्थिक प्रगति भी तब अधूरी हैं जब वे बेटी के सम्मान और सुरक्षा की गारंटी न दे सकें।

समाधान के लिए लिंग-चयन रोकने वाले नियमों का प्रभावी पालन और स्वास्थ्य सेवाओं की जवाबदेही जरूरी है। साथ ही दहेज-विरोध, बेटियों की शिक्षा, संपत्ति में समान अवसर और परिवार में बराबरी के व्यवहार को बढ़ावा देना होगा। वास्तविक परिवर्तन तब आएगा जब बेटी को बोझ समझने के बजाय स्वतंत्र व्यक्तित्व और समान अधिकारों वाला मनुष्य माना जाएगा।

चरण 4: निष्कर्ष अच्छे आलेख में समस्या का विवेचन और व्यावहारिक समाधान दोनों होते हैं। चुने हुए विषय पर शीर्षक, लेखक का नाम और सुव्यवस्थित अनुच्छेद देकर उत्तर पूरा करें।

त्वरित सुझाव: आलेख के अंत में सामान्य नारे के स्थान पर उसी समस्या से जुड़े ठोस उपाय और स्पष्ट संदेश दें।

6(ख)(i). संक्षेप में उत्तर दीजिए: समाचार किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार का संबंध नवीन, तथ्यपूर्ण और जनरुचि अथवा जनमहत्त्व वाली सूचना से है।
- समाचार में कल्पना या अपुष्ट अफवाह के स्थान पर सत्यापित तथ्य प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: मुख्य विशेषताएँ पहचानें हर सूचना समाचार नहीं बनती। उसमें नवीनता तथा पाठकों या दर्शकों के लिए प्रासंगिकता होनी चाहिए। सूचना का आधार तथ्य होना भी आवश्यक है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर बनाएँ किसी हाल की घटना या स्थिति की ऐसी तथ्यपूर्ण सूचना, जिसमें जनसाधारण की रुचि हो अथवा जिसका सार्वजनिक महत्त्व हो, समाचार कहलाती है।

चरण 3: निष्कर्ष नवीन और जनमहत्त्वपूर्ण घटना की तथ्यपूर्ण सूचना को समाचार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में नवीनता, तथ्यपरकता और जनरुचि के तत्त्व जोड़ें; केवल घटना कहना पर्याप्त नहीं है।

6(ख)(ii). संचार माध्यमों के दो प्रमुख प्रकारों का नामोल्लेख कीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संचार माध्यम सूचना और विचारों को लोगों तक पहुँचाने के साधन हैं।
- जनसंचार के प्रचलित माध्यमों को मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक वर्गों में रखा जाता है।

चरण 1: पहला प्रकार पहचानें मुद्रित माध्यम में अक्षरों और चित्रों के मुद्रण से सूचना पहुँचती है। समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ इसके परिचित उदाहरण हैं।

चरण 2: दूसरा प्रकार पहचानें इलेक्ट्रॉनिक माध्यम तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचना पहुँचाते हैं। रेडियो और टेलीविजन इसके प्रमुख उदाहरण हैं। प्रश्न में दो प्रकार पूछे गए हैं, इसलिए वर्गों के नाम देना जरूरी है।

चरण 3: निष्कर्ष दो प्रमुख प्रकार हैं: (1) मुद्रित माध्यम और (2) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम।

त्वरित सुझाव: समाचार-पत्र और रेडियो उदाहरण हैं; उत्तर में उनके वर्ग मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक अवश्य लिखें।

6(ख)(iii). समाचार लेखन की 'उल्टा पिरामिड' शैली क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उल्टा पिरामिड शैली समाचार के तथ्यों को घटते महत्त्व के क्रम में रखती है।
- इस शैली में सबसे आवश्यक सूचना आरंभ में होती है; घटनाओं का कालक्रम अनिवार्य नहीं होता।

चरण 1: आरंभिक भाग समझें समाचार के पहले भाग या इंट्रो में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य दिया जाता है, जिससे पाठक को घटना का मूल आशय तुरंत मिल जाए।

चरण 2: आगे का क्रम समझें इसके बाद मुख्य तथ्य का विस्तार, संबंधित विवरण और पृष्ठभूमि आती है। कम महत्त्व के तथ्य अंत में रखे जाते हैं। इससे अंत का कुछ अंश हटाने पर भी समाचार की मूल सूचना सुरक्षित रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार की सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले और उसके बाद घटते महत्त्व के क्रम में विवरण देने की पद्धति उल्टा पिरामिड शैली है।

त्वरित सुझाव: उल्टा पिरामिड याद रखने के लिए महत्त्व का क्रम सोचें: पहले मुख्य खबर, फिर विवरण, अंत में पृष्ठभूमि।

6(ख)(iv). विज्ञापनों की दो उपयोगिताएँ लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विज्ञापन किसी वस्तु, सेवा अथवा विचार के बारे में लक्षित लोगों तक संदेश पहुँचाता है।
- इसकी उपयोगिता सूचना देने के साथ उपभोक्ता का ध्यान और रुचि आकर्षित करने में भी है।

चरण 1: सूचना संबंधी उपयोगिता विज्ञापन उपभोक्ताओं को उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं की विशेषताओं, कीमत तथा मिलने के स्थान की जानकारी देता है। इससे उन्हें अपनी आवश्यकता के अनुसार चुनाव करने में सहायता मिलती है।

चरण 2: प्रचार संबंधी उपयोगिता विज्ञापन किसी उत्पाद या सेवा को परिचित बनाकर संभावित ग्राहकों की रुचि बढ़ाता है। इस प्रकार वह प्रचार, माँग और बिक्री बढ़ाने में सहायक होता है।

चरण 3: निष्कर्ष दो उपयोगिताएँ हैं: (1) वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी देना; (2) उनका प्रचार करके माँग तथा बिक्री बढ़ाने में सहायता करना।

त्वरित सुझाव: दो अलग उपयोगिताएँ लिखें: एक उपभोक्ता को मिलने वाली जानकारी और दूसरी उत्पादक को मिलने वाला प्रचार।

6(ख)(v). इंटरनेट की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट सूचना के तेज आदान-प्रदान और अनेक प्रकार की सामग्री तक पहुँच का माध्यम है।
- इसमें पाठक सूचना पाने के साथ संदेश भेज सकता है और अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकता है।

चरण 1: सूचना की सुलभता बताएँ इंटरनेट पर विविध विषयों की सूचनाएँ शीघ्र मिलती हैं। समाचार और जानकारी को लगातार अद्यतन किया जा सकता है तथा उपयोगकर्ता अपनी सुविधा के समय उन्हें देख सकता है।

चरण 2: संचार की सुविधा बताएँ इंटरनेट दूर बैठे लोगों के बीच त्वरित और अपेक्षाकृत कम खर्च में संवाद संभव करता है। ईमेल, संदेश और अन्य संवाद सुविधाओं से लोग आसानी से संपर्क बनाए रख सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लोकप्रियता के दो कारण हैं: (1) विविध और नवीन सूचनाओं तक शीघ्र पहुँच; (2) दूरस्थ लोगों से त्वरित तथा अपेक्षाकृत सस्ता संवाद।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय केवल सुविधाओं के नाम न गिनाएँ; बताएँ कि वे सूचना या संचार को कैसे आसान बनाती हैं।

7(क). निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: तिरती है समीर-सागर पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया — जग के दग्ध हृदय पर निर्दय विप्लव की प्लावित माया — यह तेरी रण-तरी भरी आकांक्षाओं से घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की, ऊँचा कर सिर, ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल। कविता किसे संबोधित है? उसे विप्लव का प्रतीक क्यों माना गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में संबोधित पात्र को उसके लिए प्रयुक्त संबोधन से पहचाना जाता है।
- प्रतीक के अर्थ को कविता के बिंबों और उनके सामाजिक संकेतों से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: संबोधन की पहचान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता बादल को संबोधित है। काव्यांश का अंतिम संबोधन 'ऐ विप्लव के बादल' इसे स्पष्ट करता है। कवि बादल से ऐसे बात करता है जैसे वह संसार का दुख दूर करने वाला सजीव परिवर्तनकारी साथी हो। यहाँ बादल केवल प्राकृतिक दृश्य का अंग नहीं है।

चरण 2: विप्लव का आशय बादल की गर्जना युद्ध की भेरी जैसी है। उससे पृथ्वी के भीतर सोए अंकुर सजग होते हैं और नए जीवन की आशा में सिर उठाते हैं। इसी प्रकार क्रांति पीड़ित और शोषित जनों को जाग्रत करके उनमें अन्याय के विरुद्ध उठने की शक्ति भरती है। बादल की वर्षा दग्ध धरती को राहत देती है; विप्लव भी दुखी समाज में नई व्यवस्था और जीवन की आशा लाता है। इस जागरण और परिवर्तन की क्षमता के कारण बादल विप्लव का प्रतीक है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता बादल को संबोधित है। उसकी गर्जना, जागरण और नवजीवन देने की शक्ति उसे सामाजिक क्रांति का प्रतीक बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में संबोधन के साथ गर्जना, सुप्त अंकुर और नवजीवन का संबंध अवश्य जोड़ें।

7(ख). रणतरी किसे कहते हैं? वहाँ रणतरी को आकांक्षाओं से भरी क्यों कहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ बताने के बाद उसके काव्यगत संदर्भ का अर्थ खोलना चाहिए।
- बादल का प्राकृतिक रूप और उसके माध्यम से व्यक्त परिवर्तन की आकांक्षा परस्पर जुड़े हैं।

चरण 1: रणतरी का अर्थ रणतरी का अर्थ युद्ध में प्रयुक्त होने वाली नाव अथवा युद्धपोत है। कवि ने आकाश में तैरते बादल को रणतरी कहा है। 'समीर-सागर' के रूप में कल्पित वायुमंडल में बादल की गति समुद्र में चलती युद्धनौका जैसी दिखाई देती है और उसका गर्जन युद्ध की भेरी का आभास देता है।

चरण 2: आकांक्षाओं से भरी होने का कारण यह रणतरी संसार के दुखी और पीड़ित जनों की नवजीवन संबंधी आकांक्षाएँ लेकर आती है। दग्ध धरती वर्षा की प्रतीक्षा करती है और सुप्त अंकुर जागकर बढ़ना चाहते हैं। इन प्राकृतिक बिंबों में समाज के शोषित लोगों की मुक्ति, संघर्ष और नए जीवन की आशाएँ भी निहित हैं। अत: बादल रूपी रणतरी को आकांक्षाओं से भरी कहने का आशय उसकी परिवर्तनकारी शक्ति से जुड़ी व्यापक आशाओं को व्यक्त करना है।

चरण 3: निष्कर्ष रणतरी युद्धनौका है। बादल रूपी रणतरी में पीड़ित जीवन के जागरण, मुक्ति और नवजीवन की आकांक्षाएँ भरी हैं।

त्वरित सुझाव: पहले रणतरी का सीधा अर्थ लिखें, फिर बताएँ कि बादल किनकी आशाएँ लेकर आता है।

7(ग). क्रांति के सुप्त अंकुर आकाश की ओर क्यों ताक रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य के बिंब में अभिधात्मक अर्थ के साथ उसका प्रतीकात्मक अर्थ भी देखा जाता है।
- सुप्त अंकुरों का जागरण नए जीवन और परिवर्तन की आशा को मूर्त करता है।

चरण 1: अंकुरों की प्रतीक्षा धरती के भीतर पड़े सुप्त अंकुर बादल की भेरी जैसी गर्जना सुनकर सजग हो उठे हैं। वे वर्षा से मिलने वाले जल और उसके सहारे विकसित होने वाले नए जीवन की आशा में सिर उठाकर आकाश की ओर देख रहे हैं। बादल का आना उनके लिए विकास और जीवन के अनुकूल परिस्थिति के आने का संकेत है।

चरण 2: क्रांति का प्रतीकात्मक अर्थ ये अंकुर उन दबे हुए जनों और परिवर्तन की संभावनाओं के भी प्रतीक हैं जो अभी पूरी तरह सक्रिय नहीं हो सके हैं। विप्लव के बादल उनमें जागृति और साहस जगाते हैं। वे आशा करते हैं कि क्रांति उनकी पीड़ा और पराधीनता समाप्त करके उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देगी। इसलिए उनका आकाश की ओर ताकना केवल वर्षा की प्रतीक्षा नहीं, बल्कि मुक्ति और नई सामाजिक व्यवस्था की उत्सुक प्रतीक्षा भी है।

चरण 3: निष्कर्ष सुप्त अंकुर वर्षा से नवजीवन पाने की आशा में बादलों को ताक रहे हैं; प्रतीक रूप में वे क्रांति से मुक्ति और विकास की प्रतीक्षा करते पीड़ित जन हैं।

त्वरित सुझाव: अंकुरों की वर्षा की आवश्यकता और जनसमुदाय की परिवर्तन की आवश्यकता को साथ स्पष्ट करें।

7(घ). भाव स्पष्ट कीजिए: तिरती है समीर-सागर पर अस्थिर सुख पर दुख की छाया। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में शब्दों का अनुवाद भर नहीं, उनके द्वारा व्यक्त जीवनदृष्टि स्पष्ट की जाती है।
- 'अस्थिर सुख' और 'दुख की छाया' जीवन की अनिश्चितता और पीड़ा का संकेत हैं।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब का अर्थ कवि ने वायुमंडल को समीर का सागर माना है। इस सागर पर तैरते बादल का दृश्य उस छाया जैसा है जो क्षणभंगुर सुख पर दुख के रूप में मंडराती रहती है। इस कल्पना में दृश्यात्मक सौंदर्य के साथ मनुष्य के जीवन का अनुभव भी समाया हुआ है। सुख की स्थिति यहाँ स्थायी और निश्चित नहीं मानी गई है।

चरण 2: जीवन से संबंध पंक्तियों का आशय है कि संसार में सुख अस्थिर है और उस पर दुख का प्रभाव या भय बना रहता है। पीड़ा से संतप्त मनुष्य का सुख भी दुख की छाया से पूरी तरह मुक्त नहीं होता। कवि ने आकाश में तैरते बादल और सुख पर छाई दुख की छाया में साम्य स्थापित करके जीवन की इसी स्थिति को संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया है। यह बिंब आगे आने वाले दग्ध हृदय और परिवर्तन की आकांक्षा के वर्णन की भावभूमि भी बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जैसे वायु रूपी समुद्र में बादल तैरते हैं, वैसे ही क्षणभंगुर सुख पर दुख की छाया बनी रहती है; मानव जीवन का सुख अनिश्चित और पीड़ा से घिरा है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में 'समीर-सागर' का दृश्य और 'अस्थिर सुख' की मानवीय अनुभूति दोनों बताएँ।

अथवा

7(क). अथवा: सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥ मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥ सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥ जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥ राम लक्ष्मण की किन-किन विशेषताओं का उल्लेख कर रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र संबंधी उत्तर में कथन के साथ काव्यांश में दिया गया व्यवहार प्रमाण बनता है।
- राम का विलाप लक्ष्मण के कोमल स्वभाव, भ्रातृप्रेम और त्याग को उजागर करता है।

चरण 1: कोमलता और प्रेम राम लक्ष्मण के मृदुल अर्थात कोमल और संवेदनशील स्वभाव का उल्लेख करते हैं। वे कहते हैं कि लक्ष्मण उन्हें कभी दुखी नहीं देख सकते थे। इससे स्पष्ट है कि लक्ष्मण अपने बड़े भाई के सुख-दुख के प्रति अत्यंत सजग थे और उनसे गहरा स्नेह रखते थे। राम को कष्ट में देखना उनके लिए असह्य था।

चरण 2: त्याग और कष्टसहन लक्ष्मण ने राम के हित के लिए माता-पिता का सान्निध्य छोड़ दिया और उनके साथ वन चले आए। वहाँ उन्होंने शीत, धूप और वायु जैसी कठिन परिस्थितियाँ सहन कीं। उनका यह आचरण राम के प्रति निःस्वार्थ अनुराग, समर्पण, सेवा और सहनशीलता का परिचायक है। राम इन्हीं गुणों को स्मरण करके मूर्च्छित लक्ष्मण से व्याकुल होकर उठने का आग्रह कर रहे हैं।

चरण 3: निष्कर्ष राम लक्ष्मण की कोमलता, संवेदनशीलता, अटूट भ्रातृप्रेम, त्याग, समर्पण और वन के कष्ट सहने की शक्ति का उल्लेख करते हैं।

त्वरित सुझाव: हर गुण के साथ उसका प्रमाण जोड़ें: दुख न देख पाना, माता-पिता छोड़ना और वन के कष्ट सहना।

7(ख). 'सो अनुराग कहाँ अब भाई' कथन का कारण स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विलाप में बोले गए प्रश्न का अर्थ पात्र की मानसिक स्थिति और प्रसंग से समझा जाता है।
- मूर्च्छा के कारण उत्तर न दे पाना और प्रेम का अभाव होना अलग स्थितियाँ हैं।

चरण 1: कथन का प्रसंग लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े हैं। राम उनके वियोग की आशंका से अत्यंत दुखी और व्याकुल हैं। वे उनके पुराने प्रेम को याद करते हैं: लक्ष्मण राम को दुखी नहीं देख सकते थे और उनके हित में माता-पिता को छोड़कर वन के कष्ट सहते आए थे। राम को उनके इसी गहरे अनुराग का स्मरण हो रहा है।

चरण 2: प्रेमभरे उपालंभ का अर्थ अब राम के व्याकुल वचन सुनकर भी लक्ष्मण न उठ रहे हैं और न उत्तर दे रहे हैं। इस मौन से दुखी होकर राम कहते हैं कि भाई, तुम्हारा वह प्रेम अब कहाँ चला गया है। यह कथन लक्ष्मण के प्रेम पर वास्तविक संदेह नहीं, बल्कि असहाय राम की करुण पुकार और प्रेमभरा उपालंभ है। मूर्च्छा के कारण लक्ष्मण प्रतिक्रिया नहीं दे सकते, पर राम का दुख इतना प्रबल है कि वे उनसे पहले की तरह अपने दुख को दूर करने की अपेक्षा कर रहे हैं।

चरण 3: निष्कर्ष मूर्च्छित लक्ष्मण को अपनी व्याकुल पुकार पर भी न उठते देखकर राम ने यह प्रेमभरा उपालंभ दिया; इसमें उनका गहरा भ्रातृप्रेम और वियोग का भय व्यक्त है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय लक्ष्मण की मूर्च्छा और राम की व्याकुलता को जोड़ें; अनुराग के समाप्त होने का दावा न करें।

7(ग). 'यह मुझे पहले ज्ञात होता तो मैं पिता की आज्ञा नहीं मानता' — क्या ऐसा संभव था? पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- राम का चरित्र सत्यपालन, पितृभक्ति और मर्यादा की रक्षा पर आधारित है।
- असह्य शोक में कही गई बात को स्थिर संकल्प से अलग समझना चाहिए।

चरण 1: कथन का प्रसंग लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम का धैर्य टूट जाता है। उन्हें लगता है कि वनवास के कारण ही भाई इस संकट में पड़ा है। इसी आत्मग्लानि में वे कहते हैं कि भाई का वियोग पहले ज्ञात होता तो वे पिता की आज्ञा मानकर वन नहीं आते। यह उनके गहरे भ्रातृप्रेम और तत्कालीन व्याकुलता का प्रमाण है।

चरण 2: विपक्ष में तर्क मेरे विचार से राम के लिए पिता की आज्ञा न मानना संभव नहीं था। वे सत्य और कर्तव्य को व्यक्तिगत सुख से ऊपर रखने वाले मर्यादापुरुषोत्तम हैं। उन्होंने राज्य और सुख छोड़कर वनवास स्वीकार किया था; इसलिए उनका स्वभाव जानबूझकर पितृवचन तोड़ने का नहीं है। प्रस्तुत कथन शोक के आवेग की अभिव्यक्ति है, उनके चरित्र के स्थायी आदर्श का त्याग नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः पिता की आज्ञा का उल्लंघन राम के आदर्श चरित्र के अनुकूल नहीं था; उनका कथन भाई को खोने की आशंका से उत्पन्न भावावेश है।

त्वरित सुझाव: चरित्र पर निर्णय देते समय शोक में कही बात और स्थायी आचरण में अंतर स्पष्ट कीजिए।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए: 'उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रस्तुत पंक्ति में राम मूर्च्छित लक्ष्मण से व्याकुल होकर उठने की प्रार्थना करते हैं।
- आशय लिखते समय शब्दार्थ के साथ पात्र की भावस्थिति भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: सरल अर्थ 'उठहु न सुनि मम बच बिकलाई' का आशय है कि हे भाई लक्ष्मण! मेरे व्याकुल वचन सुनकर तुम उठ क्यों नहीं जाते? राम लक्ष्मण की चेतनाहीन अवस्था से अत्यंत दुखी हैं। वे उन्हें बार-बार पुकार रहे हैं, पर कोई उत्तर न पाकर उनका शोक और बढ़ जाता है।

चरण 2: निहित भाव राम को लक्ष्मण का स्नेहपूर्ण स्वभाव याद आता है। लक्ष्मण पहले राम को दुखी नहीं देख सकते थे; उन्होंने उनके लिए माता-पिता और सुख-सुविधाएँ तक छोड़ दी थीं। अब राम की करुण पुकार सुनकर भी उनका न उठना राम को असह्य लगता है। पंक्ति में भाई के प्रति प्रेम, असहायता और उन्हें पुनः सचेत देखने की तीव्र आकुलता व्यक्त हुई है।

चरण 3: निष्कर्ष राम व्याकुल होकर लक्ष्मण को उठने के लिए पुकारते हैं; उनकी पुकार में असीम भ्रातृस्नेह और वियोग की आशंका से उपजा दुख है।

त्वरित सुझाव: इस पंक्ति का अर्थ लिखकर लक्ष्मण के पुराने स्नेह और वर्तमान निश्चेष्टता का संबंध समझाइए।

8(क). निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था ज़ोर ज़बरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई और वह भाषा में बेकार घूमने लगी हारकर मैंने उसे कील की तरह उसी जगह ठोंक दिया उपमा अलंकार का उदाहरण छाँटकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी वस्तु की समान गुण के आधार पर दूसरी वस्तु से तुलना होती है।
- उपमेय, उपमान, वाचक शब्द और साधारण धर्म पहचानने से अलंकार स्पष्ट होता है।

चरण 1: उदाहरण और पहचान उपमा का उदाहरण है—'हारकर मैंने उसे कील की तरह उसी जगह ठोंक दिया।' यहाँ 'बात' उपमेय है और 'कील' उपमान है। 'की तरह' उपमावाचक पद है। दोनों में बल लगाकर एक स्थान पर स्थिर कर देने की समानता है। इसलिए इस कथन में उपमा अलंकार है।

चरण 2: काव्य-सौंदर्य कील को ठोंकने की परिचित क्रिया के माध्यम से कवि बात की सहजता नष्ट होने की स्थिति मूर्त कर देता है। भाषा पर अनावश्यक जोर डालने से बात अपने स्वाभाविक रूप में व्यक्त नहीं हो पाती। अंत में कवि उसे जबरन निश्चित शब्दों में जड़ देता है। कील का बिंब इस कृत्रिमता, विवशता और रचनात्मक असफलता को सहज तथा प्रभावशाली बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'उसे कील की तरह' में उपमा है; इससे बात को जबरन भाषा में जड़ देने की स्थिति सजीव हो गई है।

त्वरित सुझाव: उपमा बताते समय केवल उदाहरण न लिखें; उपमेय, उपमान और तुलना का प्रभाव भी जोड़ें।

8(ख). काव्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका लक्ष्यार्थ स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ शब्दों के सीधे अर्थ से भिन्न, रूढ़ और प्रसंगानुकूल होता है।
- यहाँ यांत्रिक क्रियाओं के मुहावरे अभिव्यक्ति की विफलता को समझाते हैं।

चरण 1: चूड़ी मर जाना पहला मुहावरा है—'चूड़ी मर जाना'। इसका लक्ष्यार्थ है कार्यक्षमता या पकड़ समाप्त हो जाना और निष्प्रभावी हो जाना। पेच की चूड़ी घिस जाने पर वह कस नहीं पाता; उसी प्रकार भाषा पर अधिक जोर देने से बात अपनी प्रभावशीलता खो बैठती है। वह इच्छित अर्थ को ठीक तरह व्यक्त नहीं कर पाती।

चरण 2: ठोंक देना दूसरा मुहावरा है—'ठोंक देना'। इसका लक्ष्यार्थ है किसी बात को बलपूर्वक किसी स्थान पर जमा देना या स्थापित कर देना। कवि बात को सहज रूप में व्यक्त नहीं कर पाता, इसलिए अंततः उसे जबरन शब्दों में बाँध देता है। यहाँ यह मुहावरा रचना में स्वाभाविक प्रवाह के स्थान पर हठ और कृत्रिमता आ जाने को प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'चूड़ी मर जाना' का अर्थ प्रभाव या पकड़ खो देना तथा 'ठोंक देना' का अर्थ जबरन स्थापित कर देना है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे का रूढ़ अर्थ देने के बाद उसी काव्यांश में उसका संकेत अवश्य समझाइए।

8(ग). काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा का मूल्यांकन शब्दावली, वाक्यविन्यास और अभिव्यक्ति के प्रभाव से किया जाता है।
- सहज बोलचाल और मुहावरे जटिल रचनात्मक अनुभव को भी संप्रेषणीय बनाते हैं।

चरण 1: सहज और बोलचाल की भाषा काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल की खड़ी बोली है। 'आखिरकार', 'ज़ोर ज़बरदस्ती', 'बेकार' और 'हारकर' जैसे परिचित शब्द इसे सामान्य जीवन के निकट लाते हैं। वाक्यविन्यास में बातचीत की स्वाभाविक गति है। कवि अपने अनुभव को किसी आडंबरपूर्ण शब्दावली के बिना सीधे पाठक तक पहुँचाता है।

चरण 2: मुहावरे और चित्रात्मकता 'चूड़ी मर गई' तथा 'ठोंक दिया' जैसे मुहावरे भाषा को व्यंजक और प्रभावपूर्ण बनाते हैं। 'कील की तरह' की उपमा से बात को जबरन स्थिर कर देने की स्थिति आँखों के सामने आ जाती है। इस प्रकार साधारण शब्दों के भीतर अभिव्यक्ति की कठिनाई और भाषा से की गई ज़बरदस्ती का गहरा अर्थ छिपा है। मुक्तछंद और कथन की लय अनुभव की सहजता को बढ़ाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा बोलचाल की, मुहावरेदार और चित्रात्मक है; सरल शब्दों से कवि अभिव्यक्ति की जटिल समस्या को प्रभावी बनाता है।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता के साथ काव्यांश का कोई शब्द या मुहावरा प्रमाण के रूप में दीजिए।

अथवा

8(क). अथवा: तुम्हें भूल जाने की दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं। रूपक अलंकार का उदाहरण चुनकर उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया जाता है।
- यहाँ विस्मृति के मानसिक अनुभव को गहन अंधकार के मूर्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 1: रूपक का उदाहरण रूपक का उदाहरण है—'तुम्हें भूल जाने की दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या'। यहाँ प्रिय को भूल जाने की स्थिति पर दक्षिण ध्रुव के गहन अंधकार और अमावस्या का आरोप है। विस्मृति को केवल अंधकार जैसा नहीं कहा गया, उसे अंधकार-अमावस्या के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है; इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

चरण 2: अलंकार का सौंदर्य दक्षिण ध्रुव का दीर्घ और सघन अंधकार तथा अमावस्या की निस्तब्ध कालिमा विस्मृति की चरम अवस्था का बोध कराते हैं। वक्ता प्रिय के प्रभाव से शरीर, चेहरे और अंतर्मन तक मुक्त होना चाहता है। इस अंधकार को झेलने और उसमें नहाने की इच्छा उस अनुभूति की व्यापकता और तीव्रता व्यक्त करती है। रूपक अमूर्त मानसिक संघर्ष को दृश्य और अनुभवगम्य बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष विस्मृति पर 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या' का अभेद आरोप रूपक है; इससे भूलने की इच्छा की गहराई और सर्वव्यापकता उभरती है।

त्वरित सुझाव: रूपक की पहचान के लिए बताएँ कि उपमेय को उपमान का रूप कैसे दे दिया गया है।

8(ख). अमावास्या के लिए प्रयुक्त विशेषण पहचानिए और बताइए कि उनसे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषण किसी संज्ञा की विशेषता बताकर उसके अर्थ को अधिक स्पष्ट और प्रभावपूर्ण बनाता है।
- मुक्तिबोध के काव्यांश में अंधकार कवि की आत्मविस्मृति और प्रिय से पूर्ण मुक्ति की आकांक्षा का प्रतीक है।

चरण 1: विशेषण की पहचान अमावस्या के लिए प्रयुक्त विशेषण 'दक्षिण ध्रुवी' है। काव्यांश में 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या' कहकर साधारण रात से कहीं अधिक गहरे और व्यापक अंधकार का बिंब बनाया गया है। यहाँ अमावस्या विशेष्य है और दक्षिण ध्रुवी उसका स्वरूप स्पष्ट करता है।

चरण 2: विशेष्य में जुड़ने वाला अर्थ दक्षिण ध्रुव पर लंबे समय तक अंधकार रहता है। इसलिए यह विशेषण अमावस्या में घोर, सघन, दीर्घकालिक और सर्वग्रासी अंधकार का भाव जोड़ता है। कवि चाहता है कि यह अंधकार उसके शरीर, चेहरे, अंत:करण और प्राणों तक छा जाए। इस प्रकार वह अपने प्रिय के अत्यधिक स्नेह से बनी निर्भरता और उसके प्रभाव से पूरी तरह मुक्त होने की तीव्र इच्छा व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: 'दक्षिण ध्रुवी' विशेषण अमावस्या को अत्यंत गहरे, दीर्घ और सर्वव्यापी अंधकार का अर्थ देता है।

त्वरित सुझाव: विशेषण बताने के बाद उसका अर्थ कवि की पूरी तरह विस्मृत होने की आकांक्षा से जोड़िए।

8(ग). काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यभाषा के विवेचन में शब्दावली, बिंब, प्रतीक और वाक्यगत लय का भाव से संबंध बताया जाता है।
- मुक्तिबोध की इस कविता की भाषा आत्मसंवाद और तीव्र भावानुभूति की भाषा है।

चरण 1: शब्दावली और अभिव्यक्ति काव्यांश की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। 'दक्षिण ध्रुवी', 'अंधकार', 'अंतर' और 'प्राण' जैसे शब्द गंभीर भावभूमि रचते हैं। 'तन', 'चेहरे', 'नहा लूँ' और 'झेलूँ' जैसे सहज प्रयोग आत्मीयता लाते हैं। इस तरह संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के साथ बोलचाल की क्रियाओं का स्वाभाविक मेल मिलता है।

चरण 2: बिंब, प्रतीक और लय 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या' घने अंधकार का सशक्त बिंब है। 'उसमें नहा लूँ' में अंधकार को जल के समान अनुभव कराकर कवि उसकी सर्वव्यापकता व्यक्त करता है। अंधकार आत्मविस्मृति और प्रिय के प्रभाव से मुक्ति का प्रतीक बनता है। 'तन पर, चेहरे पर, अंतर में' का क्रम बाह्य से भीतरी अस्तित्व तक जाता है। 'झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं' जैसे प्रयोग मुक्तछंद में भावपूर्ण लय और आवेग उत्पन्न करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा बिंबात्मक, प्रतीकपूर्ण और आत्मसंवादी है; उसका शब्दचयन तथा मुक्तछंद की लय कवि की तीव्र मुक्ति-कामना को साकार करते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा पर टिप्पणी में केवल विशेषणों की सूची न दीजिए; प्रत्येक विशेषता का काव्यांश से उदाहरण दीजिए।

9(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि 'फ़िराक की रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है।' [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक की रुबाइयों में भारतीय परिवार के सहज दृश्य और लोकजीवन की आत्मीय संस्कृति व्यक्त होती है।
- घरेलूपन की पुष्टि माँ-बच्चे के संबंध, घर के काम और परिचित पर्वों के उदाहरणों से होती है।

चरण 1: माँ और बच्चे के सहज दृश्य फ़िराक की रुबाइयों में घर-आँगन का जीवन सीधे उपस्थित होता है। एक दृश्य में माँ अपने छोटे बच्चे को बाँहों में लेकर झुलाती और उछालती है; बच्चे की हँसी से घर का वातावरण आनंदमय हो उठता है। दूसरे दृश्य में माँ बच्चे को साफ पानी से नहलाती, उसके उलझे बाल सँवारती और उसे कपड़े पहनाती है। ये किसी असाधारण घटना के चित्र नहीं, भारतीय परिवार में रोज घटने वाले वात्सल्यपूर्ण प्रसंग हैं।

चरण 2: घर के त्योहार और लोकविश्वास दीवाली की संध्या पर घर में पुताई-सजावट होती है, चीनी-मिट्टी के खिलौने आते हैं और माँ बच्चे के छोटे घरौंदे में दीप जलाती है। एक अन्य रुबाई में बच्चा चाँद लेने की हठ करता है और माँ दर्पण में उसका प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है। राखी के प्रसंग में बहन के स्नेह और भाई-बहन के आत्मीय संबंध का चित्र मिलता है। इन प्रसंगों में भारतीय लोकाचार और त्योहारों का घरेलू रूप उभरता है।

चरण 3: भाषा का घरेलूपन आँगन, माँ, बच्चा, कंघी, कपड़े, खिलौने और घरौंदे जैसी परिचित वस्तुएँ कविता को घर की दुनिया से जोड़ती हैं। सहज हिंदी शब्दावली और बोलचाल के निकट अभिव्यक्ति के कारण उर्दू की रुबाई भी हिंदी भाषी परिवार के अपने अनुभव जैसी लगती है। इस प्रकार दृश्य, संस्कृति और भाषा तीनों स्तरों पर घरेलूपन सिद्ध होता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः फ़िराक की रुबाइयों में माँ का वात्सल्य, बच्चे की हठ, घर-आँगन और भारतीय पर्व सहज हिंदी में चित्रित हैं; यही उनका घरेलू रूप है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में माँ-बच्चे का एक दृश्य और दीवाली या राखी का एक उदाहरण अवश्य जोड़िए।

9(ख). 'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर खेत और काग़ज़ के पन्ने की समानता के तीन बिंदुओं पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि ने काग़ज़ के पन्ने को खेत मानकर कविता रचने की प्रक्रिया का रूपक प्रस्तुत किया है।
- खेत और पन्ने की समानता में बीज, अंकुर तथा फल-फसल के क्रम को समझना आवश्यक है।

चरण 1: खेत और पन्ना : सृजन की भूमि जिस प्रकार छोटा खेत अन्न उगाने की भूमि है, उसी प्रकार काग़ज़ का पन्ना कविता के जन्म की भूमि है। किसान खेत में खेती करता है और कवि पन्ने पर शब्दों के माध्यम से रचना करता है। कविता में काग़ज़ का छोटा चौकोर पन्ना कवि का अपना खेत बन जाता है। दोनों ही आकार में छोटे होकर भी फलदायी सृजन की संभावना रखते हैं।

चरण 2: बीज और भाव : अंकुरण की समानता खेत में डाला गया बीज मिट्टी में गलकर अंकुर बनता है। इसी प्रकार किसी क्षण की अनुभूति या भाव कवि के अंतर्मन में बीज की तरह पड़ता है। कल्पना के रसायन से वह विकसित होता है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। कवि अपनी अनुभूति को आत्मसात करके उसे अभिव्यक्ति देता है, जैसे बीज अपना मूल रूप खोकर नए पौधे में बदल जाता है।

चरण 3: फसल और कविता : फल की प्राप्ति खेत का पौधा पत्तों, फूलों और फलों से भरता है; वैसे ही शब्दों से विकसित रचना रसपूर्ण कविता बनती है। अन्न की फसल लोगों का पेट भरती है और कविता का रस पाठकों को आनंद तथा भावसमृद्धि देता है। यहाँ एक विशेष अंतर भी है: खेत की फसल कटकर समाप्त होती है, किंतु कविता का आनंद बार-बार ग्रहण किया जा सकता है; उसकी रसधारा समाप्त नहीं होती।

चरण 4: निष्कर्ष सृजन की भूमि, बीज से अंकुर बनने की प्रक्रिया और उपयोगी फसल की प्राप्ति—इन तीन आधारों पर खेत तथा काग़ज़ का पन्ना समान हैं।

त्वरित सुझाव: तीन बिंदुओं को भूमि, बीज-अंकुर और फसल के क्रम में लिखने से पूरा रूपक स्पष्ट हो जाएगा।

9(ग). सिद्ध कीजिए कि 'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता दृश्य माध्यमों द्वारा पीड़ा के व्यावसायिक प्रदर्शन की आलोचना करती है।
- सच्ची करुणा पीड़ित की गरिमा की रक्षा करती है; दिखावटी करुणा उसकी विवशता का तमाशा बनाती है।

चरण 1: सामाजिक उद्देश्य का मुखौटा कार्यक्रम बनाने वाले स्वयं को समर्थ बताते हैं और कार्यक्रम को सामाजिक उद्देश्य से जुड़ा बताते हैं। इससे लगता है कि वे दिव्यांग व्यक्ति का दुःख समझना और समाज को उसके प्रति संवेदनशील बनाना चाहते हैं। किंतु बातचीत का ढंग दिखाता है कि उनकी चिंता उसके जीवन में सुधार लाने की नहीं, दर्शकों के सामने प्रभावपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करने की है। यही घोषित करुणा उनका मुखौटा है।

चरण 2: प्रश्नों और कैमरे की क्रूरता साक्षात्कारकर्ता व्यक्ति की शारीरिक स्थिति पर बार-बार प्रश्न करके उसे अपनी विवशता का अनुभव कराने पर तुला है। वह उत्तर के लिए पर्याप्त स्वतंत्रता और समय देने के स्थान पर उसके रोने की प्रतीक्षा करता है। कैमरे को उसकी आँखों की ओर करके पीड़ा का बड़ा दृश्य तैयार किया जाता है। किसी की असहायता को उभारना और आँसू निकलवाने का दबाव बनाना उसकी संवेदना तथा आत्मसम्मान पर आघात है।

चरण 3: पीड़ा को कार्यक्रम की सफलता बनाना निर्माताओं की दृष्टि में उस व्यक्ति का रो पड़ना कार्यक्रम को करुणापूर्ण और प्रभावशाली बना देगा। दर्शक भी इस निर्मित दृश्य को देखकर भावुक हों, यही उनका लक्ष्य है। इस प्रकार पीड़ित मनुष्य एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के स्थान पर दृश्य-सामग्री बन जाता है। कार्यक्रम समाप्त हो जाता है, पर उसकी वास्तविक कठिनाइयों का समाधान नहीं होता। कविता इसी अमानवीय व्यवहार और संवेदना के प्रदर्शन पर व्यंग्य करती है।

चरण 4: निष्कर्ष अत: कविता में करुणा का दावा करने वाला मीडिया पीड़ित की गरिमा को कुचलकर उसकी वेदना का प्रदर्शन करता है; इसी कारण यह करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है।

त्वरित सुझाव: दावे और व्यवहार को जोड़कर लिखिए: सामाजिक उद्देश्य का दावा, रोने का दबाव और आँसुओं का प्रदर्शन।

10(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है, जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति — शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वे बाज़ार का लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। 'बाज़ार का बाज़ारूपन' से लेखक का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार की उपयोगिता आवश्यक वस्तुओं के क्रय-विक्रय में है।
- आवश्यकता से अलग धन का प्रदर्शन बाज़ार में उपभोक्तावादी प्रवृत्ति बढ़ाता है।

चरण 1: शब्द का आशय समझना यहाँ बाज़ारूपन का आशय बाज़ार में बढ़ते दिखावे, लोभ, प्रलोभन और अनावश्यक खरीदारी से है। ऐसी प्रवृत्ति में वस्तु का उपयोग कम महत्त्वपूर्ण हो जाता है और पैसे की ताकत दिखाना अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

चरण 2: गद्यांश से संबंध जोड़ना जो लोग अपनी जरूरत नहीं पहचानते, वे क्रयशक्ति के गर्व में खरीदारी करते हैं। इससे बाज़ार वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के स्थान पर इच्छाएँ भड़काने और लाभ कमाने का साधन बनता है। लेखक इसी विकृति को बाज़ार का बाज़ारूपन कहता है। इस स्थिति में मनुष्य वस्तु का स्वामी होने के बजाय आकर्षण का शिकार बन जाता है। धन का प्रदर्शन बाज़ार की शक्ति तो बढ़ाता है, पर उसकी मानवीय उपयोगिता घटाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का बाज़ारूपन आवश्यकता के स्थान पर दिखावे, लालच और धनबल से संचालित उपभोक्तावादी प्रवृत्ति है।

त्वरित सुझाव: बाज़ारूपन समझाते समय सामान्य क्रय-विक्रय और अनावश्यक दिखावे की खरीदारी का अंतर स्पष्ट करें।

10(ख). बाज़ार को सार्थकता कौन दे सकता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आवश्यकता की स्पष्ट पहचान विवेकपूर्ण खरीदारी का आधार है।
- ग्राहक और बाज़ार दोनों का लाभ उपयोगी लेन-देन से होता है।

चरण 1: योग्य ग्राहक की पहचान बाज़ार को वही मनुष्य सार्थकता दे सकता है, जो अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या चाहिए। गद्यांश का वाक्य, "जो जानता है कि वह क्या चाहता है, ऐसे सचेत और संयमी ग्राहक की पहचान कराता है।

चरण 2: सार्थकता का तरीका वह अपनी वास्तविक जरूरत की वस्तुएँ खरीदता है और केवल पैसे होने के कारण अनावश्यक वस्तुओं के आकर्षण में नहीं पड़ता। इससे उसकी आवश्यकता पूरी होती है तथा विक्रेता को उपयोगी वस्तु बेचने का उचित लाभ मिलता है। इस प्रकार बाज़ार समाज की जरूरतें पूरी करने का माध्यम बनता है। यहाँ सार्थकता का संबंध अधिक पैसा खर्च करने से नहीं, सही प्रयोजन के लिए खर्च करने से है। ग्राहक का संयम बाज़ार को जरूरत से जोड़कर रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष अपनी जरूरत पहचानने वाला विवेकशील ग्राहक आवश्यक वस्तुओं का उचित क्रय करके बाज़ार को सार्थकता देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कौन के साथ कैसे भी लिखें: जरूरत पहचानना और उसी के अनुसार खरीदना, दोनों बातें आवश्यक हैं।

10(ग). पर्चेजिंग पावर क्या है? उससे बाज़ार का अहित कैसे होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पर्चेजिंग पावर का अर्थ वस्तुएँ खरीदने की आर्थिक क्षमता है।
- आर्थिक क्षमता का अहंकार आवश्यकता से असंबद्ध उपभोग को जन्म देता है।

चरण 1: पर्चेजिंग पावर का अर्थ पर्चेजिंग पावर का अर्थ क्रयशक्ति है, अर्थात् पैसे के बल पर वस्तुएँ खरीद सकने की क्षमता। गद्यांश में लेखक इस क्षमता के गर्व पर प्रहार करता है। केवल पैसा होना यह निश्चित नहीं करता कि व्यक्ति उसका उपयोग अपनी वास्तविक आवश्यकता के लिए करेगा।

चरण 2: बाज़ार का अहित समझना जब व्यक्ति जरूरत जाने बिना धन के घमंड में खरीदता है, तब वह बाज़ार को उपयोगिता के स्थान पर दिखावे और लालच की ओर धकेलता है। ऐसी खरीदारी प्रलोभन और अनावश्यक उपभोग बढ़ाती है। इसीलिए लेखक कहता है कि ये लोग न बाज़ार का सही लाभ लेते हैं, न उसे सच्चा लाभ देते हैं। आलोचना पैसे की नहीं, पैसे के घमंड से उत्पन्न अविवेक की है।

चरण 3: निष्कर्ष क्रयशक्ति का अहंकार अनावश्यक खरीदारी बढ़ाकर बाज़ार की सेवा और उपयोगिता की भावना को हानि पहुँचाता है।

त्वरित सुझाव: क्रयशक्ति की परिभाषा देने के बाद स्पष्ट करें कि अहित उसके गर्वपूर्ण दुरुपयोग से होता है।

10(घ). क्या आप लेखक की राय का समर्थन करते हैं? क्यों? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तर्कसम्मत मत में स्पष्ट पक्ष और गद्यांश से जुड़ा कारण होना चाहिए।
- आवश्यकता पर आधारित खरीदारी व्यक्ति और समाज दोनों के हित में है।

चरण 1: अपना पक्ष स्पष्ट करना हाँ, मैं लेखक की राय का समर्थन करता हूँ। बाजार का उद्देश्य मनुष्य की आवश्यकताएँ पूरी करना होना चाहिए। यदि ग्राहक अपनी जरूरत समझकर खरीदता है, तो उसका धन सही काम आता है और वस्तुएँ भी उपयोग में आती हैं।

चरण 2: मत के समर्थन में तर्क केवल धन दिखाने या आकर्षण में आकर खरीदने से अनावश्यक उपभोग और वस्तुओं का अपव्यय बढ़ता है। इसके विपरीत संयमित ग्राहक उपयोगी वस्तुओं को प्रोत्साहित करता है और विक्रेता को भी वास्तविक माँग का पता चलता है। इसलिए जरूरत की स्पष्टता ग्राहक तथा बाजार, दोनों को सच्चा लाभ देती है। इससे आवश्यकता और इच्छा में अंतर करने की समझ भी विकसित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का मत उचित है, क्योंकि जरूरत के अनुसार विवेकपूर्ण खरीदारी धन का सदुपयोग करती है और बाज़ार को उपयोगी बनाती है।

त्वरित सुझाव: सहमति या असहमति पहले लिखें, फिर उसी पक्ष के समर्थन में गद्यांश से जुड़े ठोस कारण दें।

अथवा

10(क). अथवा: हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का नाम निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बात करते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे रह जाते हैं। आखिर कब बदलेगी यह स्थिति? लेखक को हमारे स्वभाव से शिकायत क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश व्यक्ति की माँगों और उसके सामाजिक योगदान के विरोध को उजागर करता है।
- दूसरों की आलोचना से पहले अपने आचरण की जाँच आवश्यक है।

चरण 1: लेखक की शिकायत पहचानना लेखक को शिकायत है कि हम देश और समाज से हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ रखते हैं, पर उनके लिए त्याग करने को तैयार नहीं होते। अपना स्वार्थ ही हमारा एकमात्र लक्ष्य बन गया है। हम अधिकार और सुविधा चाहते हैं, किंतु अपने कर्तव्य की उपेक्षा करते हैं।

चरण 2: शिकायत का आधार बताना हम दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा तो चटखारे लेकर करते हैं, पर यह नहीं देखते कि अपने स्तर पर हम स्वयं उसी भ्रष्टाचार में सहभागी तो नहीं हैं। गद्यांश में माँगों की अधिकता, त्याग का अभाव और आत्मपरीक्षण से बचना हमारे स्वभाव की कमियों के रूप में सामने आते हैं। लेखक चाहता है कि नागरिक माँग करने के साथ देश के लिए अपना योगदान भी दें।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक हमारे स्वार्थी, त्यागहीन और आत्मपरीक्षण से बचने वाले स्वभाव से असंतुष्ट है।

त्वरित सुझाव: शिकायत का उत्तर देते समय माँग और त्याग का विरोध तथा दूसरों की आलोचना और अपनी जाँच का अंतर लिखें।

10(ख). भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए लेखक क्या अपेक्षा करता है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आत्मपरीक्षण अपने आचरण और सामाजिक समस्या में अपनी भागीदारी की जाँच है।
- सामाजिक सुधार की शुरुआत व्यक्तिगत ईमानदारी और उत्तरदायित्व से होती है।

चरण 1: लेखक की अपेक्षा भ्रष्टाचार की चर्चा करते हुए लेखक अपेक्षा करता है कि हम केवल दूसरों पर आरोप लगाने में आनंद न लें। हमें अपने व्यवहार की जाँच करनी चाहिए कि कहीं हम अपने स्तर पर उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं। गद्यांश का प्रश्न पाठक को इसी आत्मपरीक्षण के लिए प्रेरित करता है।

चरण 2: अपेक्षा का कारण यदि हम दूसरों की बुराई करें और स्वयं अनुचित आचरण करते रहें, तो स्थिति में कोई सुधार नहीं होगा। भ्रष्टाचार केवल किसी दूसरे की समस्या नहीं है; उसे बनाए रखने में हमारा स्वार्थ भी भागीदार हो सकता है। इसलिए ईमानदार आचरण, त्याग और अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक आत्मपरीक्षण और अपने आचरण में सुधार चाहता है, क्योंकि अपनी भागीदारी समाप्त किए बिना भ्रष्टाचार दूर नहीं होगा।

त्वरित सुझाव: अपेक्षा और उसका कारण अलग लिखें: पहले अपने आचरण की जाँच, फिर उससे सुधार संभव होने का तर्क दें।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए: काले मेघा, दल के दल ..... पियासे रह जाते हैं। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक के माध्यम से संसाधनों के दुरुपयोग और सामाजिक विषमता का आशय स्पष्ट करना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और प्रश्न के प्रत्येक अपेक्षित पक्ष को प्रमाण सहित जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: बिंबों का अर्थ समझिए काले मेघों का दल के दल उमड़ना और झमाझम बरसना देश में संसाधनों, सुविधाओं तथा विकास के अवसरों की उपलब्धता का संकेत है। इसके विपरीत फूटी गगरी ऐसी दोषपूर्ण व्यवस्था का बिंब है जिसमें उपलब्ध साधन टिक नहीं पाते और जनकल्याण के लिए सुरक्षित नहीं रह पाते। गगरी में छेद हों तो वर्षा का पानी भी बेकार बह जाता है।

चरण 2: सामाजिक आशय स्पष्ट कीजिए लेखक का आशय है कि प्रचुर साधन होने पर भी स्वार्थ, भ्रष्टाचार और त्याग के अभाव में उनका लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता। प्यासे बैल उन श्रमशील और अभावग्रस्त लोगों का संकेत हैं जिनके लिए योजनाएँ और सुविधाएँ बनती तो हैं, पर उनकी मूल आवश्यकताएँ अधूरी रह जाती हैं। केवल साधनों की वृद्धि पर्याप्त नहीं है; उनके सदुपयोग के लिए ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व भी आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में साधनों की प्रचुरता के बीच आम लोगों की वंचना और भ्रष्ट व्यवस्था पर व्यंग्य है।

त्वरित सुझाव: मेघ, फूटी गगरी और प्यासे बैल के अर्थों को उपलब्ध साधन, दोषपूर्ण व्यवस्था और वंचित जनता से जोड़कर आशय लिखिए।

10(घ). आपके विचार में यह स्थिति कब बदलेगी और कैसे बदलेगी? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के आधार पर सामाजिक परिवर्तन के लिए व्यक्ति और व्यवस्था की जिम्मेदारी पहचानना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और प्रश्न के प्रत्येक अपेक्षित पक्ष को प्रमाण सहित जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: परिवर्तन की शर्त पहचानिए मेरे विचार में यह स्थिति तब बदलेगी जब हम दूसरों के भ्रष्टाचार की चर्चा करने के साथ अपने आचरण की भी ईमानदारी से जाँच करेंगे। केवल अधिकार और सुविधाएँ माँगने के स्थान पर देश तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्य निभाएँगे। निजी स्वार्थ को ही जीवन का लक्ष्य मानने की प्रवृत्ति छोड़ना इस परिवर्तन की पहली शर्त है।

चरण 2: परिवर्तन का उपाय बताइए इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्तर पर भ्रष्टाचार का सहयोग बंद करना होगा और सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग जिम्मेदारी से करना होगा। सामाजिक हित के लिए कुछ त्याग करने, जरूरतमंदों तक सुविधाएँ पहुँचाने और उत्तरदायी व्यवस्था बनाने से ही फूटी गगरी जैसी स्थिति सुधरेगी। जनता की सक्रिय भागीदारी, ईमानदार कार्य और दूसरों के श्रम के प्रति संवेदना मिलकर साधनों को जनकल्याण में बदलेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष स्थिति आत्मपरीक्षण, कर्तव्यपालन, त्याग और ईमानदार सामूहिक प्रयास से बदलेगी; सुधार की शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से करनी होगी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल सरकार से अपेक्षा न लिखें; गद्यांश के अनुसार अपने आचरण में सुधार और सामाजिक जिम्मेदारी को भी जोड़ें।

11(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लिखिए: पाठ के आधार पर 'भक्तिन' की तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में चरित्र की विशेषताओं को उसके व्यवहार और घटनाओं के आधार पर समझना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और प्रश्न के प्रत्येक अपेक्षित पक्ष को प्रमाण सहित जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: परिश्रम और स्वाभिमान भक्तिन की पहली विशेषता उसकी कर्मठता है। कठिन पारिवारिक परिस्थितियों और जीवन की प्रतिकूलताओं के बावजूद वह श्रम से पीछे नहीं हटती। लेखिका के घर में रसोई तथा अन्य काम अपने अनुभव और लगन से सँभालती है। दूसरी विशेषता उसका स्वाभिमान है। वह अपने श्रम और योग्यता के बल पर जीती है; अपने संबंध को साधारण वेतन पाने वाली नौकरानी की सीमा में नहीं बाँधती। उसका दृढ़ व्यक्तित्व उसे दया का पात्र बनने के बजाय आत्मसम्मान के साथ खड़ा रखता है।

चरण 2: निष्ठा और आत्मीयता तीसरी विशेषता लेखिका के प्रति उसकी अटूट निष्ठा और आत्मीयता है। धीरे-धीरे उसका संबंध सेविका और स्वामिनी के औपचारिक संबंध से आगे बढ़कर अभिभावक जैसा हो जाता है। वह लेखिका की आवश्यकताओं, भोजन और सुख-सुविधा की चिंता अपनेपन से करती है। लेखिका के जेल जाने की संभावना पर भी साथ चलने की उसकी इच्छा इसी समर्पण का प्रमाण है। उसके व्यवहार में कभी हठ और रूढ़ संस्कार भी दिखाई देते हैं, किंतु इससे उसके स्नेह और निष्ठा का महत्त्व कम नहीं होता।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन परिश्रमी, स्वाभिमानी और निष्ठावान स्त्री है। जीवन के संघर्षों तथा लेखिका से उसके आत्मीय संबंध में ये तीनों विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं।

त्वरित सुझाव: तीन विशेषताएँ अलग-अलग पहचानें और प्रत्येक को भक्तिन के काम, स्वाभिमान या लेखिका के प्रति व्यवहार के उदाहरण से पुष्ट करें।

11(ख). 'लुट्टन पहलवान की ढोलक गाँव के असहाय और मरणासन्न लोगों को मरने का हौसला देती थी।' इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में महामारी, लोककला और मनुष्य की जिजीविषा का संबंध समझना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और प्रश्न के प्रत्येक अपेक्षित पक्ष को प्रमाण सहित जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: कथन का संदर्भ समझिए गाँव में महामारी और अभाव ने लोगों को असहाय बना दिया था। रात का सन्नाटा मृत्यु के भय को और बढ़ाता था। ऐसे समय लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज अँधेरे और निराशा के बीच सुनाई देती थी। जिन लोगों के पास बीमारी से बचने के साधन और सहारा नहीं था, उन्हें यह ध्वनि मनोबल देती थी। ढोलक ने स्वयं पहलवान को संघर्ष करना सिखाया था; वही संघर्ष का संदेश अब पूरे गाँव तक पहुँचता था।

चरण 2: हौसला देने का आशय स्पष्ट कीजिए इस कथन का अर्थ यह नहीं है कि ढोलक लोगों को मृत्यु की इच्छा करना सिखाती थी। उसका आशय है कि मृत्यु निकट होने पर भी वे भय और निराशा के आगे पूरी तरह टूटते नहीं थे। उसकी लय उन्हें साहस, जीवन की स्मृति और संघर्ष की प्रेरणा देती थी। वह रोग का उपचार नहीं कर सकती थी, पर अकेलेपन और मानसिक पराजय से जूझने में साथ देती थी। स्वयं अपने पुत्रों को खो देने पर भी पहलवान का ढोलक बजाते रहना उसके असाधारण धैर्य और लोककल्याण की भावना को दिखाता है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: ढोलक असहाय लोगों को विपत्ति का साहसपूर्वक सामना करने की शक्ति देती थी। कथन लोककला की मानवीय भूमिका और जीवन की अंतिम घड़ी तक बनी रहने वाली जिजीविषा को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: "मरने का हौसला" का अर्थ आत्महत्या या मृत्यु की चाह नहीं, बल्कि मृत्यु के भय के बीच भी साहस बनाए रखना स्पष्ट करें।

11(ग). चार्ली चैप्लिन कौन था? उनके बचपन और पारिवारिक परिवेश पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ के आधार पर कलाकार के बचपन और पारिवारिक संघर्षों का उसके संवेदनशील व्यक्तित्व से संबंध समझना।
- उत्तर में पाठ के प्रसंग और प्रश्न के प्रत्येक अपेक्षित पक्ष को प्रमाण सहित जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: चार्ली का परिचय और परिवार चार्ली चैप्लिन विश्वप्रसिद्ध अभिनेता, हास्य कलाकार और फिल्मकार थे। विशेष रूप से मूक फिल्मों में उनकी अद्भुत अभिनय-कला ने साधारण मनुष्य के दुख और संघर्ष को हास्य के साथ प्रस्तुत किया। उनका बचपन इंग्लैंड के लंदन में गरीबी और असुरक्षा में बीता। उनके माता-पिता रंगमंच से जुड़े थे, किंतु परिवार को स्थिर आर्थिक सहारा नहीं मिला। पिता से अलगाव और माँ के जीवन के संघर्षों ने बालक चार्ली को बहुत कम उम्र में अभाव का अनुभव करा दिया।

चरण 2: बचपन के अनुभवों का प्रभाव उनकी माँ को आर्थिक कठिनाइयों तथा स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ा। चार्ली और उनके भाई का जीवन भी इन परिस्थितियों से प्रभावित हुआ। इस परिवेश ने उन्हें भूख, अपमान और बेबसी झेलते सामान्य लोगों के निकट पहुँचाया। माँ की अभिनय और नकल की क्षमता का प्रभाव भी उनके व्यक्तित्व पर पड़ा। बाद में उनकी फिल्मों का छोटा, असहाय किंतु हार न मानने वाला मनुष्य इसी अनुभव-संसार से जुड़ा दिखाई देता है। इसलिए उनका हास्य केवल मनोरंजन नहीं करता, उसमें करुणा और वंचित मनुष्य के प्रति गहरी सहानुभूति भी रहती है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली चैप्लिन महान हास्य अभिनेता और फिल्मकार थे। अभावपूर्ण बचपन तथा संघर्षशील पारिवारिक परिवेश ने उनके हास्य को मानवीय करुणा और सामान्य मनुष्य के संघर्ष से जोड़ा।

त्वरित सुझाव: परिचय के बाद गरीबी, माँ के संघर्ष और इन अनुभवों से विकसित करुणापूर्ण हास्य का संबंध समझाएँ; अप्रमाणित घटनाएँ न जोड़ें।

11(घ). 'नमक' कहानी की मूल संवेदना पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सीमाओं से परे मानवीय संबंध और जन्मभूमि से लगाव।
- पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के केंद्रीय कथन से जोड़कर उत्तर देना आवश्यक है।

चरण 1: विभाजन की पृष्ठभूमि समझना रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' भारत-पाकिस्तान के विभाजन से बने राजनीतिक अलगाव के बीच मनुष्य की आत्मीयता को सामने लाती है। देश बँट जाने पर भी स्मृतियाँ, अपनापन और जन्मभूमि से भावनात्मक संबंध समाप्त नहीं होते। कहानी में सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती हैं और वहाँ के नमक की इच्छा करती हैं। उनकी छोटी-सी माँग में बिछुड़े स्थान और पुराने जीवन की गहरी याद समाई है।

चरण 2: नमक में निहित मानवीय संदेश सफ़िया उस नमक को भारत लाने का प्रयत्न करती है। सीमा के दोनों ओर के कस्टम अधिकारियों के व्यवहार से स्पष्ट होता है कि नियमों और राष्ट्रीय पहचानों के भीतर भी संवेदनशील मनुष्य मौजूद हैं। अपने पुराने वतन को याद करने वाले इन लोगों की अनुभूतियाँ सिख बीबी की अनुभूति से जुड़ती हैं। इस प्रकार नमक केवल खाने की वस्तु नहीं रह जाता; वह साझा संस्कृति, स्मृति, प्रेम और आत्मीयता का प्रतीक बनता है। कहानी बताती है कि राजनीतिक सरहदें मानवीय रिश्तों और साझी विरासत को पूरी तरह बाँट नहीं सकतीं।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी की मूल संवेदना यह है कि जन्मभूमि का प्रेम और मनुष्य की आत्मीयता धर्म तथा देश की सीमाओं से बड़ी हैं। नमक इन्हीं अविभाज्य मानवीय संबंधों का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: नमक की माँग को स्वाद से आगे बढ़ाकर वतन की स्मृति और सीमा-पार आत्मीयता से जोड़ें।

11(ङ). जातिप्रथा को श्रमविभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के तर्कों का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर के अनुसार जन्माधारित श्रमिक-विभाजन और स्वाभाविक श्रमविभाजन का अंतर।
- पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के केंद्रीय कथन से जोड़कर उत्तर देना आवश्यक है।

चरण 1: श्रमिकों के विभाजन और ऊँच-नीच का तर्क आंबेडकर जातिप्रथा को श्रमविभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं मानते, क्योंकि वह काम का ही नहीं, श्रमिकों का भी विभाजन करती है। वह लोगों को जन्म के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बाँटकर उन वर्गों में ऊँच-नीच का क्रम बनाती है। सामान्य श्रमविभाजन में अलग-अलग कार्य समाज की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं; उससे कार्य करने वाले मनुष्यों की गरिमा में जन्मजात असमानता स्थापित करना आवश्यक नहीं होता।

चरण 2: स्वतंत्रता, दक्षता और परिवर्तन का तर्क जातिप्रथा में व्यक्ति को अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। उसका व्यवसाय उसकी व्यक्तिगत दक्षता के स्थान पर माता-पिता की सामाजिक स्थिति से पहले ही निर्धारित हो जाता है। उद्योग और रोजगार की परिस्थितियाँ बदलने पर भी उसे दूसरा पेशा अपनाने में सामाजिक बाधा आती है। इससे बेरोजगारी बढ़ सकती है। अनिच्छा से थोपे गए काम में व्यक्ति का मन भी नहीं लगता, जिससे कार्यकुशलता घटती है। इसलिए ऐसी कठोर और जन्माधारित व्यवस्था समाज के हित में उपयोगी श्रमविभाजन नहीं कही जा सकती।

चरण 3: निष्कर्ष जातिप्रथा जन्म, ऊँच-नीच और पेशे की बाध्यता पर आधारित श्रमिक-विभाजन है। वह व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा कार्यकुशलता रोकती है, इसलिए आंबेडकर उसे मात्र श्रमविभाजन मानने का विरोध करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में श्रमिकों का विभाजन, ऊँच-नीच, पेशा चुनने की बाधा और बदलते रोजगार की समस्या अलग-अलग स्पष्ट करें।

12(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि सिंधु सभ्यता में भव्यता का आडंबर नहीं था। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक साक्ष्यों से समाज के सौंदर्यबोध और नागरिक संस्कृति का मूल्यांकन।
- पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के केंद्रीय कथन से जोड़कर उत्तर देना आवश्यक है।

चरण 1: विशाल सत्ता-प्रदर्शन का अभाव 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेषों के माध्यम से सिंधु सभ्यता की विशिष्टता सामने आती है। वहाँ की खुदाई में विशाल राजप्रासाद, भव्य मंदिर अथवा राजाओं की विराट मूर्तियों जैसे सत्ता और ऐश्वर्य के प्रदर्शन के प्रमाण नहीं मिलते। इसके विपरीत नगर के सामान्य जीवन से जुड़ी चीजें अधिक ध्यान आकर्षित करती हैं। इसलिए उसकी पहचान किसी शासक के वैभव के आडंबर से नहीं बनती।

चरण 2: नागरिक सुविधाओं और कलात्मक सुघड़ता की प्रधानता नगर की सुनियोजित सड़कें, मकान, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था बताते हैं कि वहाँ व्यवस्थित नागरिक जीवन को महत्त्व दिया गया था। विशाल सामूहिक स्नानागार भी सार्वजनिक उपयोग और सुव्यवस्था का परिचायक है। मुहरों, छोटे शिल्पों, मूर्तियों और अन्य कलात्मक वस्तुओं में सुघड़ता तथा सूक्ष्म सौंदर्यबोध दिखाई देता है। यहाँ कला की पहचान उसके बड़े आकार या दिखावटी भव्यता से नहीं, सुंदर बनावट और उपयोगिता से होती है। इन साक्ष्यों से ऐसी संस्कृति उभरती है जिसकी समृद्धि सामान्य जीवन की गुणवत्ता और कलात्मक परिष्कार में व्यक्त होती थी।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता की विशेषता राजसी भव्यता का प्रदर्शन नहीं, नागरिक सुविधाएँ, सुव्यवस्थित जीवन और कला की सुघड़ता थी। इसी कारण पाठ उसे भव्यता के आडंबर से मुक्त सभ्यता के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: राजप्रासादों के अभाव के साथ सड़क, जल-निकासी और छोटे शिल्पों के सकारात्मक प्रमाण अवश्य दें।

12(ख). 'जूझ' कहानी के प्रमुख पात्र को पढ़ना जारी रखने के लिए कैसे जूझना पड़ा और किस उपाय से वह सफल हुआ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद के संघर्ष में पढ़ाई की आकांक्षा, पारिवारिक विरोध और व्यावहारिक समझौते की भूमिका।
- पाठ के प्रसंगों को प्रश्न के केंद्रीय कथन से जोड़कर उत्तर देना आवश्यक है।

चरण 1: पढ़ाई के मार्ग में पारिवारिक बाधा 'जूझ' का प्रमुख पात्र आनंद पढ़ना चाहता था, पर उसके पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते थे। पिता की दृष्टि में विद्यालय जाने से खेत का काम प्रभावित होता था। आनंद को खेती के परिश्रम और घर की प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अपनी पढ़ाई छूटने का दुख था। वह समझता था कि शिक्षा उसके जीवन को बदलने का रास्ता है। इसलिए पिता के विरोध के सामने भी उसने पढ़ाई की इच्छा नहीं छोड़ी और उसे फिर आरंभ करने का उपाय खोजा।

चरण 2: दत्ता जी राव की सहायता और परिश्रम से सफलता आनंद ने माँ के सहयोग से दत्ता जी राव के सामने अपनी समस्या रखी। दत्ता जी राव ने उसके पिता को समझाया और उनके व्यवहार पर नाराज़गी प्रकट की। उनके प्रभाव से पिता आनंद को विद्यालय भेजने के लिए तैयार हुए, पर उन्होंने खेत और घर के काम करने की शर्तें रखीं। आनंद को विद्यालय जाने से पहले तथा लौटने के बाद कृषि-संबंधी जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती थीं। उसने ये कठिन शर्तें स्वीकार कीं और श्रम के साथ पढ़ाई जारी रखी। इस प्रकार माँ का सहयोग, दत्ता जी राव का हस्तक्षेप और आनंद की अपनी दृढ़ता मिलकर उसकी शिक्षा का बंद रास्ता खोल सके।

चरण 3: निष्कर्ष आनंद ने पिता के विरोध और खेती की जिम्मेदारियों से जूझते हुए माँ तथा दत्ता जी राव की सहायता ली। काम करने की कठोर शर्तें स्वीकार करके और निरंतर परिश्रम से वह पढ़ाई जारी रखने में सफल हुआ।

त्वरित सुझाव: संघर्ष के साथ समाधान की कड़ी लिखें: माँ का सहयोग, दत्ता जी राव का हस्तक्षेप और काम के साथ पढ़ाई।

12(ग). यशोधर पंत पर किशन दा के प्रभाव की समीक्षा कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किशन दा यशोधर पंत के मार्गदर्शक हैं; उनके प्रभाव को जीवन-मूल्यों और व्यवहार के आधार पर समझना चाहिए।
- समीक्षा में प्रभाव के सकारात्मक पक्ष के साथ बदलते समय में उससे उत्पन्न सीमा भी बताई जाती है।

चरण 1: मार्गदर्शन और जीवन-मूल्य यशोधर पंत के व्यक्तित्व के निर्माण में किशन दा का गहरा योगदान है। दिल्ली आने पर किशन दा ने उन्हें सहारा दिया और जीवन में स्थापित होने में सहायता की। इसलिए यशोधर उन्हें अपना आदर्श मानते हैं। किशन दा की सादगी, ईमानदारी, अनुशासन और आत्मीयता उनके आचरण में उतर आई है। यशोधर संबंधों को केवल लाभ-हानि से नहीं आँकते और बिरादरी तथा आत्मीय जनों के प्रति दायित्व निभाना चाहते हैं।

चरण 2: प्रभाव की सीमा और प्रासंगिकता किशन दा की जीवन-दृष्टि पर उनकी निर्भरता इतनी अधिक है कि वे नई परिस्थितियों को भी उन्हीं पुराने मानदंडों से परखते हैं। पत्नी और बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली उन्हें असहज करती है। इस दृष्टि से उनका आदर्श-प्रेम नई पीढ़ी के साथ संवाद में बाधा भी बनता है। साथ ही किशन दा की अकेलेपन से भरी अंतिम अवस्था यशोधर को अपने भविष्य के विषय में सोचने को विवश करती है। इस प्रकार किशन दा उनके नैतिक संबल भी हैं और अपने संभावित अकेलेपन को पहचानने का माध्यम भी।

चरण 3: निष्कर्ष किशन दा ने यशोधर को मानवीयता और सादगी के संस्कार दिए, किंतु उनके आदर्शों से अत्यधिक बँधे रहने के कारण यशोधर बदलते पारिवारिक जीवन से सहज सामंजस्य नहीं बिठा पाते।

त्वरित सुझाव: प्रभाव की समीक्षा करते समय संस्कार, व्यवहार और नए समय में उनकी सीमा—इन तीनों को जोड़ें।

13(क). किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 'ऐन फ्रेंक की डायरी' में नारी के अधिकारों पर व्यक्त विचारों पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न ऐन फ्रैंक की स्त्री-पुरुष समानता और नारी-सम्मान संबंधी दृष्टि की समझ जाँचता है।
- उत्तर में अधिकारों के साथ स्त्री के श्रम और मातृत्व के सम्मान का विचार भी स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: समानता और स्वतंत्रता का विचार ऐन स्त्रियों को पुरुषों से कमतर मानने का विरोध करती है। वह मानती है कि स्त्री को शिक्षा, काम और सामाजिक जीवन में पुरुष के समान अधिकार तथा अवसर मिलने चाहिए। केवल पुरुषों के बनाए नियमों के कारण उसे अधीन रखना उचित नहीं है। स्त्रियों ने अपनी योग्यता और परिश्रम से यह सिद्ध किया है कि वे स्वतंत्र निर्णय और उत्तरदायित्व निभाने में सक्षम हैं।

चरण 2: स्त्री के योगदान का सम्मान ऐन स्त्री की शारीरिक बनावट के अंतर को उसकी हीनता का आधार नहीं मानती। वह संतान को जन्म देने की पीड़ा और मातृत्व के योगदान को विशेष सम्मान देती है। उसके विचार में समाज को स्त्री के इस योगदान का मूल्य पहचानना चाहिए और उसे आदर देना चाहिए। उसके विचार आत्मसम्मान, समान अवसर और स्त्री की मानवीय गरिमा के पक्ष में हैं।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन के विचारों में स्त्री के लिए समान अधिकारों की माँग और उसके विशिष्ट योगदान के सम्मान की अपेक्षा एक साथ व्यक्त होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को केवल समानता तक सीमित न रखें; मातृत्व और स्त्री के योगदान के प्रति सम्मान भी जोड़ें।

13(ख). 'जो हुआ होगा' कथन के दो आशय 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में एक ही कथन का सामान्य अर्थ और उसके पीछे छिपा मार्मिक सामाजिक अर्थ अलग हैं।
- किशन दा की मृत्यु और वृद्धावस्था के अकेलेपन के संदर्भ से दोनों आशय स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: मृत्यु का कारण अज्ञात होना किशन दा की मृत्यु का कारण पूछने पर उनके संबंधी का उत्तर है—जो हुआ होगा। इसका सीधा आशय है कि मृत्यु का ठीक-ठीक कारण मालूम नहीं है; कोई बीमारी या दूसरी परिस्थिति रही होगी। यह अनिश्चित उत्तर इस उदासीनता को भी प्रकट करता है कि किसी ने उनकी मृत्यु का वास्तविक कारण जानने की चिंता नहीं की।

चरण 2: उपेक्षा और अकेलेपन की मार्मिकता कथन का दूसरा आशय वृद्ध व्यक्ति की उपेक्षित और अकेली अवस्था है। सेवा-निवृत्ति के बाद जब व्यक्ति स्वयं को अनुपयोगी और आत्मीय सहारे से वंचित अनुभव करता है, तब जीवन का उत्साह क्षीण होने लगता है। यशोधर की सोच में किशन दा की मृत्यु इसी अकेलेपन से जुड़ती है। कथन संकेत करता है कि परिवार का होना भी आत्मीयता और देखभाल की गारंटी नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पहला आशय मृत्यु के वास्तविक कारण की अनभिज्ञता है; दूसरा आशय उपेक्षा, अकेलेपन और आत्मीय सहारे के अभाव से जीवन का टूटना है।

त्वरित सुझाव: दो आशयों को अलग लिखें: पहले शाब्दिक अनिश्चितता, फिर वृद्धावस्था की उपेक्षा का व्यंजित अर्थ।

13(ग). 'मोहनजो-दड़ो' क्यों प्रसिद्ध है? दो कारण लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मोहनजो-दड़ो सिंधु सभ्यता का महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक नगर है।
- दो कारण बताते समय नगर-योजना और पुरातात्त्विक साक्ष्यों को अलग-अलग स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: सुव्यवस्थित नगर-योजना मोहनजो-दड़ो अपनी विकसित नगर-योजना के लिए प्रसिद्ध है। उसकी सीधी सड़कें, व्यवस्थित गलियाँ, पकी ईंटों के मकान, स्नानघर और जल-निकासी की व्यवस्था प्राचीन नगरवासियों के उन्नत नागरिक जीवन का प्रमाण हैं। महान स्नानागार भी उसके स्थापत्य और सार्वजनिक जीवन की विशेषता को प्रकट करता है। इन अवशेषों से स्वच्छता तथा सामुदायिक व्यवस्था के प्रति सजगता का पता चलता है।

चरण 2: समृद्ध सभ्यता के पुरातात्त्विक प्रमाण यहाँ मिली मुहरें, मूर्तियाँ, मृद्भांड तथा अन्य दैनिक उपयोग की वस्तुएँ सिंधु सभ्यता की कला, शिल्प और जीवन-पद्धति की जानकारी देती हैं। ये अवशेष हजारों वर्ष पुराने सांस्कृतिक विकास के प्रमाण हैं। इनके कारण मोहनजो-दड़ो केवल खंडहरों का स्थल नहीं, बल्कि प्राचीन सभ्यता के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केंद्र है।

चरण 3: निष्कर्ष मोहनजो-दड़ो अपनी उत्कृष्ट नगर-योजना और सिंधु सभ्यता के समृद्ध पुरातात्त्विक अवशेषों के कारण प्रसिद्ध है।

त्वरित सुझाव: दो कारण स्पष्ट रखने के लिए एक बिंदु में नगर-व्यवस्था और दूसरे में कलात्मक तथा सांस्कृतिक अवशेष लिखें।

14. 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करने के लिए उसके अर्थ का संबंध कथानायक की परिस्थितियों, संघर्षों और उपलब्धियों से स्थापित किया जाता है।
- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में शिक्षा प्राप्त करने और रचनात्मक व्यक्तित्व विकसित करने की तीव्र आकांक्षा केंद्रीय है।

चरण 1: शीर्षक का अर्थ और कथानायक की स्थिति 'जूझ' का अर्थ है कठिन परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करना। रचना का किशोर कथानायक आनंदा पढ़ना चाहता है, किंतु उसकी पारिवारिक और आर्थिक परिस्थितियाँ उसके अनुकूल नहीं हैं। पिता उसे विद्यालय भेजने के स्थान पर खेत में काम कराना चाहते हैं। खेती के काम और पिता के कठोर व्यवहार के बीच उसकी पढ़ाई रुक जाती है। इस प्रकार उसका पहला संघर्ष शिक्षा का अवसर पाने के लिए है। वह अपनी इच्छा छोड़कर परिस्थितियों के आगे समर्पण नहीं करता।

चरण 2: शिक्षा के लिए व्यावहारिक संघर्ष आनंदा अपनी माँ के साथ दत्ता जी राव के पास जाकर सहायता माँगता है। उनके हस्तक्षेप से उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर मिलता है, किंतु खेत का काम करने की जिम्मेदारी समाप्त नहीं होती। उसे विद्यालय जाने से पहले और लौटने के बाद खेती के काम करने पड़ते हैं। पढ़ाई के लिए समय निकालना, थकान सहना और पिता की नाराजगी के बीच अपनी लगन बनाए रखना उसके दृढ़ संकल्प को प्रकट करता है। विद्यालय लौटने पर भी उसे पढ़ाई का छूटा हुआ क्रम पकड़ना पड़ता है। अतः विद्यालय में प्रवेश मिल जाना संघर्ष की समाप्ति नहीं, उसका नया चरण है।

चरण 3: प्रतिभा के विकास का आंतरिक संघर्ष आनंदा का संघर्ष केवल आर्थिक अभाव या पारिवारिक विरोध तक सीमित नहीं है। वह अपने भीतर आत्मविश्वास और साहित्यिक संवेदना भी विकसित करता है। सौंदलगेकर मास्टर के प्रभावपूर्ण कविता-पाठ से उसमें कविता के प्रति रुचि जागती है। वह कविताएँ गुनगुनाता है, उनके भाव अनुभव करता है और स्वयं कविता रचने का अभ्यास करता है। खेत में काम करते हुए भी उसका मन रचनात्मक रहता है। साधारण ग्रामीण जीवन की कठिन परिस्थितियों में ज्ञान और कविता के लिए यह लगन उसके व्यक्तित्व को विकसित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' शीर्षक आनंदा के जीवन की केंद्रीय प्रवृत्ति को व्यक्त करता है। पारिवारिक बाधाओं, श्रम और अभावों के बीच शिक्षा तथा साहित्य के लिए उसका निरंतर संघर्ष पूरी रचना को एक सूत्र में बाँधता है। इसलिए यह संक्षिप्त, अर्थपूर्ण और कथावस्तु के

सर्वथा अनुकूल शीर्षक है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक के अर्थ से आरंभ करके पिता का विरोध, खेती के साथ पढ़ाई और कविता-साधना के तीन प्रसंगों को उससे जोड़िए।

अथवा

14. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी के आधार पर यशोधर पंत के स्वभाव की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के व्यवहार, विचार, संबंधों और प्रतिक्रियाओं से उसकी स्वभावगत विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- मनोहर श्याम जोशी की 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर पंत पुरानी जीवन-दृष्टि और बदलते पारिवारिक मूल्यों के बीच खड़े मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं।

चरण 1: सरल, अनुशासनप्रिय और परंपरा से जुड़े व्यक्ति यशोधर पंत सादगी, नियमितता और पुराने संस्कारों को महत्त्व देते हैं। उनकी जीवन-दृष्टि पर किशन दा का गहरा प्रभाव है। वे उनके जीवन-मूल्यों और व्यवहार को सम्मान से याद करते हैं। दफ्तर में भी उनका व्यक्तित्व पुरानी कार्य-संस्कृति से जुड़ा दिखाई देता है। वे दिखावे और अनावश्यक खर्च से सहज नहीं हो पाते। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को आधुनिक ढंग से मनाने का विचार उन्हें अपना नहीं लगता; पारंपरिक धार्मिक और सामाजिक आचरण के प्रति उनका अधिक झुकाव है।

चरण 2: नई पीढ़ी से असहमति और अपनापन बच्चों की आधुनिक जीवन-शैली और तेजी से बदलती आकांक्षाएँ यशोधर बाबू को असहज करती हैं। बेटे भूषण की अधिक आय और उसकी नौकरी की प्रकृति भी उनके मन में संशय उत्पन्न करती है। वे हर नए व्यवहार को सहज स्वीकार नहीं कर पाते और उसमें उचित-अनुचित का प्रश्न उठाते हैं। पत्नी का बच्चों के साथ आधुनिकता की ओर बढ़ना उनकी दूरी का अनुभव और बढ़ाता है। फिर भी यह दूरी परिवार के प्रति प्रेम की अनुपस्थिति नहीं है। वे चाहते हैं कि परिवार में आत्मीय संवाद, बड़ों का सम्मान और संबंधों की गरिमा बनी रहे।

चरण 3: संवेदनशीलता, संकोच और अकेलापन यशोधर पंत भीतर से अत्यंत संवेदनशील हैं, पर अपनी भावनाएँ सीधे व्यक्त करने में संकोच करते हैं। परिवार के उत्सव में भी उन्हें अपनी दुनिया और बच्चों की दुनिया का अंतर महसूस होता है। भूषण द्वारा दिए गए ड्रेसिंग गाउन के प्रसंग में उनकी प्रतिक्रिया विशेष अर्थ रखती है। बेटे का उपहार स्वीकार करते समय वे ऐसे स्नेहपूर्ण आग्रह की अपेक्षा करते हैं जिसमें सुबह दूध लेने स्वयं चले जाने वाले पिता की सुविधा का भी ध्यान हो। इससे स्पष्ट है कि वस्तु से अधिक उन्हें अपनत्व और देखभाल की आवश्यकता है। किशन दा की स्मृति से उनका लगाव उनके अकेलेपन और आत्मीय सहारे की खोज को भी उजागर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत सरल, संस्कारनिष्ठ, अनुशासनप्रिय और संवेदनशील व्यक्ति हैं। पुराने मूल्यों के प्रति उनका आग्रह कभी-कभी उन्हें परिवर्तन के प्रति संदेहशील बनाता है, किंतु उनकी मूल आकांक्षा परिवार में आत्मीयता और सम्मान बनाए रखना है। उनके चरित्र में पीढ़ियों का अंतर और बदलते समय में मध्यवर्गीय व्यक्ति का अकेलापन प्रभावी रूप से सामने आता है।

त्वरित सुझाव: हर विशेषता के साथ एक प्रसंग जोड़िए; किशन दा का प्रभाव, वर्षगाँठ का आयोजन और ड्रेसिंग गाउन विशेष उपयोगी उदाहरण हैं।